रुपये 10

सेवा समर्पण

वर्ष-40, अंक-03, कुल पृष्ठ-36, अग्रहन-पौष, विक्रम सम्वत् 2079, दिसम्बर, 2022

18 समाजसेवियों/संस्थाओं को दिया गया संत ईश्वर सम्मान

अगरतला में सेवाधाम के पूर्व छात्रों और सेवा भारती के अध्यक्ष की भेंट

गत दिनों सेवा भारती दिल्ली के अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल त्रिपुरा के दौरे पर रहे। इस दौरान उन्होंने 10 नवंबर को त्रिपुरा की राजधानी अगरतला में सेवाधाम के पूर्व छात्रों से भेंट की। यह भेंट अगरतला स्थित होटल पोलो टॉवर में हुई। इस अवसर पर सेवाधाम के 11 पूर्व छात्र उपस्थित रहे। इस भेंट से सेवाधाम के पूर्व छात्र बहुत ही प्रसन्न हुए। सेवाधाम के पूर्व छात्र और इन दिनों एक डिग्री कॉलेज में सहायक प्रोफेसर श्री हमनी भाग्य जमातिया का कहना था कि इस मुलाकात ने हमें अपने बहुत पुराने सहपाठियों से बहुत लंबे समय के बाद मिलने का अवसर प्रदान किया। उन्होंने यह भी कहा कि इस अनौपचारिक बैठक का उद्देश्य है त्रिपुरा और देश के लोगों के कल्याण के लिए हमारे योगदान को सुनिश्चित करना। वहीं श्री रमेश अग्रवाल ने इस मुलाकात को अपने लिए सबसे सुखद और उत्साहजनक बताया। उन्होंने कहा कि मैं सेवाधाम के पूर्व छात्रों से मिलकर अभिभूत और प्रेरित हूं। ये लोग मानवता के लिए महान कार्य कर रहे हैं। ये अपना काम ईमानदारी और प्रतिबद्धता के साथ कर रहे हैं, जो उन्होंने सेवाधाम से सीख है। उन्होंने कहा कि सेवाधाम व्यापक भारतीय लोकाचार के उस पहलू का प्रतिनिधित्व करता है जहां चरित्र निर्माण समाज का एक अभिन्न लक्ष्य है। यहां लोग और समाज एक-दूसरे के विकास में बाधा डालने के बजाय एक-दूसरे के पूरक हैं। इसकी शिक्षा सीबीएसई पाठ्यक्रम पर आधारित है और गुरुकुल की तरह ही छात्रावास की सुविधा है। उन्होंने बताया कि वर्तमान में 25 राज्यों के 299 छात्र हैं। इस बैठक का उद्देश्य उन तरीकों की पहचान करना भी है जो ये पूर्व छात्र स्कूल और उसके छात्रों की समग्र क्षमता बनाने में मदद कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि यह स्कूल बिना किसी सरकारी मदद के चलता है।

अनुभूति कार्यक्रम

अनुभूति कार्यक्रम के अन्तर्गत अक्टूबर महीने में पूर्वी विभाग के भिन्न-भिन्न जिलों की बस्तियों में प्रवास रहा। इसमें अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री मुरलीधर जी, शैलेन्द्र जी, संघ बन्धु, राष्ट्रीय सेविका समिति की बहनों ने सेवा भारती के कार्यकर्ताओं को अपना सहयोग प्रदान किया। शिक्षिका, निरीक्षिका, और बस्ती सेवकों के सहयोग से घुमंतू समाज, गाडिया लुहार की बस्तियों और अन्य बस्तियों के परिवारों में अनुभूति सामग्री का वितरण किया गया। गांधी नगर जिले में, स्थान- मजदूर चौक, लक्ष्मीनगर, कार्यकर्ता-12, संख्या-300

स्ट्रीट चिल्ड्रेन के बच्चे हुए पुरस्कृत

एचयूडीसीओ द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी कला प्रतियोगिता जो कि 10 सितम्बर 2022 को आयोजित की गई थी, में स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रकल्प में पढ़ने वाले बच्चों ने भी भाग लिया था। प्रतियोगिता में केन्द्र के तीन बच्चों को (वंश-कम्प्यूटर कक्षा, बबिता -सिलाई एवं कटाई, तथा प्रिया पासवान-कोचिंग) को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं चतुर्थ पुरस्कार से सम्मानीय केन्द्रीय मंत्री श्री हरदीप सिंह पुरी जी द्वारा सम्मानित किया गया।

प्रथम पुरस्कार के रूप में 15000 रुपये की राशि, द्वितीय पुरस्कार के रूप में 10000 रुपये की राशि तथा चतुर्थ पुरस्कार के रूप में 5000 रु की पुरस्कार राशि प्रदान की गई। पुरस्कृत किये गये बच्चों को राशि के साथ प्रशस्ति पत्र और एक स्कूल बैग भी दिया गया।

सेवा भारती, स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रकल्प, दिलशाद गार्डन में दिनांक 05 नवम्बर 2022 को केन्द्र एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. ममता ठाकुर के सहयोग से बस्ती की बालिकाओं और महिलाओं के लिए चिकित्सा कैम्प का आयोजन किया गया। कैम्प में सर्वाईकिल कैंसर एवं गर्भाशय कैंसर से के प्रति लोगों को जागरूक किया गया। उनके स्वास्थ्य की जाँच की गई। हड्डियों, शुगर और हीमोग्लोबिन की जाँच की गई। जिनको जरूरत थी उनको दवाइयों का वितरण भी किया गया। यह कैम्प दोपहर 2.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक चला। लगभग 80 महिलाओं ने स्वास्थ्य परीक्षण कराया तथा दवाई भी प्राप्त की।

परामर्शदाता
आचार्य मायाराम पतंग
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

सहसम्पादक
शिवाली अग्रवाल

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर

एक प्रति : 10/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 100/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-40, अंक-03, कुल पृष्ठ-36, दिसम्बर, 2022

विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
सम्पादकीय		04
18 समाजसेवियों/संस्थाओं को दिया गया संत ईश्वर सम्मान		06
नर के लिए नारायण की वाणी है गीता	वासुदेवशरण अग्रवाल	08
श्रीमद्भगवतगीता और आज की प्रासंगिकता	अभिनव गुप्त	12
सर्व-सार ओंकार	इन्दिरा मोहन	14
माँ, माँ है, मित्र नहीं	मृदुला सिन्हा	16
शांति की खोज	प्रतिनिधि	19
कहानी : मेहनत की मूर्ति रेखा रानी	आचार्य मायाराम "पतंग"	20
कविता : सर्वमान्य नेता अटल जी	आचार्य मायाराम "पतंग"	21
मानवता के पुजारी थे मालवीय जी	डॉ. सत्या भार्गव	22
शास्त्रार्थ की पंडिता गार्गी	अंजु पाण्डेय	26
त्यौहारी हमारी सभ्यता	विनीता अग्निहोत्री	27
मेरे सपनों का भारत (निबंध)	दिव्या	27
तमसो मा ज्योतिर्गमय	श्यामबाबू शर्मा	28
ऐसे बनाएं जीवन को मंगलमय	पं. चन्द्रप्रकाश गोसाईं	30
शाकाहारी कैसे बचें मांसाहार से?	श्री रामनिवास जी लखोटिया	32
गाली में प्रशंसा	छट्ठू ठाकुर	34

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

टूटते परिवार और बिखरते लोग

गत 21 नवंबर, 2022 के अनेक समाचारपत्रों में एक समाचार छपा है। उसके अनुसार करनाल के रामनगर में अकेले रहने वाले मनोहरलाल का निधन कब हो गया, इसकी जानकारी किसी को नहीं हुई। कई दिन बाद जब उनके घर से दुर्गंध आने लगी तब पड़ोसियों को शक हुआ और उन्होंने पुलिस को सूचना दी। पुलिसकर्मी दरवाजा तोड़कर अंदर गए तो उन्होंने देखा कि मनोहरलाल मरे पड़े हैं और उनके शव को चूहे कुतर रहे हैं। खैर, पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर आगे की कार्रवाई की। दूसरी ओर पड़ोसियों ने गुरुग्राम में रहने वाले मनोहरलाल के पुत्र और पत्नी को घटना की जानकारी दी। वे लोग आए और तब उनका अंतिम संस्कार संपन्न हुआ।

पता चला कि मनोहरलाल आयकर विभाग में चालक थे। सेवानिवृत्ति के बाद कुछ ज्यादा ही दारू पीने लगे थे। इस कारण घर में आएदिन झगड़े होते थे। उनके पुत्र और पत्नी ने उन्हें बहुत समझाने का प्रयास किया, लेकिन वे माने नहीं और अपनी आदत में कोई सुधार नहीं किया। रोज-रोज की किच-किच से तंग आकर उनकी पत्नी गुरुग्राम में नौकरी कर रहे अपने बेटे के पास रहने लगी थी।

इधर मनोहरलाल दारू पीते और अपने में ही मस्त रहते। अकेले में ही उन्होंने लगभग 10 वर्ष बिता दिए। इस बीच उन्होंने अपने किसी नाते-रिश्तेदार से कोई मतलब नहीं रखा। यानी वे अपनी ही दुनिया में रहते। यही उन्हें अच्छा लगता था। इसका दुष्परिणाम क्या हुआ, यह सबके सामने है।

कह सकते हैं कि मनोहरलाल ने दारू के लिए अपनी पत्नी, पुत्र और अन्य नाते-रिश्तेदारों को छोड़ दिया। यह भी हो सकता है कि उनकी पत्नी में भी कोई ऐसी बात होगी, जो उन दोनों को दूर करती रही। दोष दोनों में हो सकते हैं। इसके बावजूद दोनों को आपसी समझदारी तो दिखानी ही चाहिए थी और समझदारी यह थी कि दोनों एक-दूसरे से दूर न होते। यदि ऐसा होता तो मनोहरलाल का अंत इस तरह नहीं होता।

दरअसल, यह सब एकल परिवार के दुष्परिणाम हैं। रोजी-रोटी के लिए लोग पत्नी और बच्चों साथ अपने बड़े-बुजुर्गों से दूर रहते हैं। ऐसे में यदि कभी किसी कारणवश पति-पत्नी में खटपट होती है, तो उन्हें समझाने वाला या शांत करने वाला घर में कोई नहीं होता है। इस कारण दोनों के बीच की दूरियाँ बढ़ती रहती हैं और एक समय ऐसा आता है कि दोनों एक-दूसरे को देखना भी पसंद नहीं करने लगते हैं। कुछ लोग तो अदालत में तलाक की अर्जी लगाने लगते हैं और कुछ मनोहरलाल जैसे होते हैं कि अकेले जीवन जीने लगते हैं।

यह स्थिति समाज के लिए बहुत ही दु:खद और चिन्तनीय है। ऐसी स्थिति पैदा न हो, इसके लिए कुछ रास्ता ढूंढना होगा। एक रास्ता यह है कि भले ही आप पूरे साल भर कहीं भी रहें, लेकिन साल में कम से कम 15 दिन अपने बड़े-बुजुर्गों के साथ बिताएं। बच्चों को एकांकी न होने दें। उन्हें गाँव-घर ले जाएं। सारे संबंधियों से मिलवाएं। उनके प्रति उनमें आदर भाव जगाएं। बच्चों के सामने अपने किसी रिश्तेदार की बुराई न करें, बल्कि उनकी अच्छाई बताएं। इससे टूटते परिवारों में एक ऐसा अपनत्व पैदा होगा कि अवसर आने पर वह जीवन को संभाल लेगा। परिवार के आदर्श और पारिवारिक मूल्यों के बिना यह समाज बिखर रहा है। इसे नई पीढ़ी के लिए बचाएं। आज शहरों में भाग-दौड़ वाली जिंदगी है। किसी के पास अपने लिए भी समय नहीं है। जब तक शरीर में ताकत होती है लोग दिन-रात भागते हैं, लेकिन जैसे-जैसे यह शक्ति कम होने लगती है तब लोगों को अपना परिवार याद आता है। इसलिए हम सब अपने परिवार को बचाने का संकल्प लें। ❐

पाथेय

सन्यासस्तु महावाो दुःखमाप्तुमयोगत ।
योगमुक्तामुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति॥

सरलार्थ : भक्ति में लगे बिना केवल कर्मो का परित्याग करने से कोई सुखी नही हुआ। भक्ति में लीन विचारवान व्यक्ति शीघ्र ही परमेश्वर को प्राप्त कर लेता है ।

– गीता अध्याय पंचम् श्लोक छह

शाश्वत धर्म

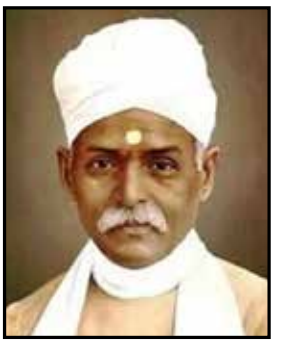

कृष्ण भगवान् को जानने के लिए सबसे पहले भीष्म और वेदव्यास जी को जानें। उन कृष्ण भगवान् ने गीता का अमृतपान अर्जुन को कराया है। उस अर्जुन के हृदय में गहरा मैल जम गया था जिसके निकालने में 18 अध्याय गीता के कहने पड़े। उसका सब विकार धो दिया और उसकी कायरता दूर कर कर्तव्य में लगा दिया। भगवान् ने ज्ञान, भक्ति, कर्म, संन्यास, त्याग सभी बातों का निचोड़ बता दिया। अर्जुन से कह दिया कि- सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥ कैसी मृदङ्ग की थाप लगाई कि तप, व्रत, आदि धर्मो का भरोसा छोड़कर मेरी शरण आ जाओ, रंज मत करो, मत दुःखी हो, मैं सब तरह रक्षक हूँ। गीता का उपदेश देकर अर्जुन को ही नहीं वरन् मानव मात्र का कर्तव्य बता दिया कि धर्मयुद्ध में प्राण न्योछावर कर दें।

– महामना मदनमोहन मालवीय

दिसम्बर 2022 माह के स्मरणीय दिवस

दिनांक	वार	महत्व
दिनांक	वार	महत्व
1.12.2022	गुरुवार	विश्व एड्स दिवस
3.12.2022	शनिवार	विश्व दिव्यांग दिवस एवं श्री गीता जयंती
4.12.2022	रविवार	मोक्षदायिनी एकादशी
5.12.2022	सोमवार	महर्षि अरविन्द पुण्य तिथि
7.12.2022	बुधवार	दतात्रेय जयंती, सेना दिवस
10.12.2022	शनिवार	विश्व मानवाधिकार दिवस
15.12.2022	गुरुवार	सरदार पटेल पुण्य तिथि
23.12.2022	शुक्रवार	किसान दिवस, श्रद्धानंद बलिदान दिवस
25.12.2022	रविवार	अटल बिहारी जयंती/ मालवीय जयंती

18 समाजसेवियों/संस्थाओं को दिया गया संत ईश्वर सम्मान

गत 13 नवम्बर को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में संत ईश्वर फाउंडेशन एवं राष्ट्रीय सेवा भारती के सहयोग से राजधानी दिल्ली के विज्ञान भवन में देश के प.पू. स्वामी अवधेशानंद गिरि जी, केंद्रीय मंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी जी के सान्निध्य में संत ईश्वर सम्मान समारोह का आयोजन हुआ।

संत ईश्वर फाउंडेशन के अध्यक्ष कपिल खन्ना ने संत ईश्वर सम्मान का परिचय देते हुए बताया कि संत ईश्वर फाउंडेशन की स्थापना 9 वर्ष पूर्व हुई थी और 7 वर्ष पूर्व पहली बार संत ईश्वर सम्मान देना प्रारंभ हुआ था। यह सम्मान व्यक्तिगत एवं संस्थागत रूप में मुख्यत: चार क्षेत्र- जनजातीय, ग्रामीण विकास, महिला-बाल विकास एवं विशेष योगदान (कला, साहित्य, पर्यावरण, स्वास्थ्य और शिक्षा) में तीन श्रेणियों 1 विशेष सेवा सम्मान, 4 विशिष्ट सेवा सम्मान एवं 12 सेवा सम्मान में दिया जाता है। जो क्रमश: आर्ट ऑफ लिविंग बैंगलोर के भानुमति नरसिम्हन को संत ईश्वर विशेष सेवा सम्मान मिला, वहीं जनजातीय क्षेत्र में मिजोरम से पुईथीयाम रोरेलियना (विशिष्ट सेवा सम्मान), कर्नाटक से कौशल्या रविंद्र हेगड़े, सिक्किम से सोनम डुंडेन लेपचा, मध्य प्रदेश से मेवालाल पाटीदार को संत ईश्वर सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया।

भानुमती नरसिम्हन, आर्ट ऑफ लिविंग, जिन्होंने बैंगलोर, कर्नाटक में 30 बच्चों के साथ संस्था की शुरुआत की और महिला शिक्षा, कैदी पुनर्वास, गरीबी उन्मूलन, महिला स्वास्थ्य जागरूकता के क्षेत्रों में कार्य करते हुए 8000 से अधिक महिलाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं देशभर में 170000 से अधिक महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया। उन्हें इस वर्ष संत ईश्वर विशेष सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया।

ग्रामीण क्षेत्र में गुजरात के राम कुमार सिंह (विशिष्ट सेवा सम्मान), गुजरात कच्छ के नीलकंठ गो विज्ञान केंद्र, तेलंगाना के पल्ले सृजन एवं उत्तर प्रदेश से खुशहाली फाउंडेशन को संत ईश्वर सेवा सम्मान दिया गया।

नीलकंठ गो विज्ञान केंद्र गुजरात के कच्छ क्षेत्र

में गोपालन और गोसंवर्धन का प्रेरक है। मेघजी भाई हिरानी ने गोबर आधारित 80 से ज्यादा उत्पाद में 25000 से ज्यादा गोबर के गणपति और केवल इस वर्ष 10 लाख गोबर के दीए बनवाए। इससे गांव में रहने वाले निवासियों को आर्थिक लाभ भी हुआ और देसी गाय को पालना भी और अधिक शुरू हुआ।

खुशहाली संस्था विशेषकर वंचित समाज के बच्चों की शिक्षा और शारीरिक पुष्टता के लिए कार्य करने के साथ पर्यावरण जागरूकता और स्वावलंबन के लिए भी कार्य कर रही है। खुशहाली संस्था ने बरेली, पीलीभीत, कासगंज, मथुरा, अमेठी, प्रयागराज, बनारस, सोनभद्र और देहरादून तक ऐसे 2 लाख परिवारों को 11 लाख से अधिक फलदार पेड़ दिए।

महिला एवं बाल विकास क्षेत्र से गुजरात के श्री गुरुजी ज्ञान मंदिर को (विशिष्ट सेवा सम्मान) जम्मू से मुक्ति संस्था, महाराष्ट्र से सावित्री बाई फुले महिला एकात्म मंडल, बिहार से वंदे मातरम युवा मिशन को सम्मानित किया गया। वंदे मातरम युवा मिशन बिहार के गया में शिक्षा का अलख जगाने का कार्य कर रहा है। 1500 से अधिक झुग्गी झोपड़ियों के वंचित बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा देते हुए संस्था आज 100 शिक्षकों और कार्यकर्ताओं की सहायता से 15 से अधिक सांध्यकालीन पाठशाला संचालित कर रही है जहां लाभार्थियों की संख्या निरंतर बड़ रही है।

विशेष योगदान क्षेत्र में पंजाब के उमेन्द्र दत्त को (विशिष्ट सेवा सम्मान), राजस्थान से डॉ तपेश माथुर, उत्तराखंड से संचिंदानन्द भारती, अरुणाचल प्रदेश से बानबंद लोसु एवं राजस्थान से मेजर सुरेंद्र नारायण माथुर को वर्ष 2022 के संत ईश्वर सम्मान से सम्मानित किया गया। इस प्रकार से इस वर्ष देशभर से समाज के कल्याण में लगे 18 व्यक्तियों एवं संस्थाओं को सम्मानित किया गया।

संत ईश्वर फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री कपिल खन्ना ने मंचस्थ पूज्य स्वामी अवधेशानंद जी और अन्य विभूतियों के साथ 'सेवा परमो धर्म' पुस्तक का विमोचन करते हुआ बताया कि इस वर्ष संत ईश्वर सम्मान सम्मान देने का शतक (100) पूरा कर रहा है और यह पुस्तक उन सभी 100 सेवा साधकों का परिचय देते हुए समाज को सेवा करने की प्रेरणा सदैव देती रहेगी, ऐसा विश्वास है।

पूज्य स्वामी जूनापीठाधीश्वर अवधेशानंद गिरि जी महाराज ने आशीर्वाद देते हुए संत ईश्वर सम्मान को शतक पूरा करने की बधाई दी और कहा कि संत ईश्वर सम्मान आने वाले समय में भी सेवा करने वालों का ऐसे ही सम्मान करता रहेगा।

केंद्रीय राज्य मंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी भी इस अवसर पर अभिभूत थी और उन्होंने भी शतक पूरा करने पर बधाई देते हुए बताया कि इस पुस्तक से सभी को सेवा करने की प्रेरणा मिलेगी।

आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर इतिहास में पहली बार विज्ञान भवन में उपस्थित अतिथियों ने एक साथ खड़े होकर तिरंगा बनाया और वंदे मातरम गाकर इस समारोह को एक अविस्मरणीय पल में बदल दिया।

इस अनूठे सम्मान समारोह में विज्ञान भवन खचाखच भरा हुआ था, लग रहा था पूरी दिल्ली ही इन सेवाव्रतियों का सम्मान करने उमड़ पड़ी थी। संत ईश्वर फाउंडेशन और राष्ट्रीय सेवा भारती के लगभग 500 कार्यकर्ता व्यवस्था में तैनात थे। ❐

नर के लिए नारायण की वाणी है गीता

■ **वासुदेवशरण अग्रवाल**

श्रीमद्भगवद्गीता भीष्मपर्व का सुप्रसिद्ध अंश है। इसके 18 अध्याय हैं। आरम्भ में और अंत में इसमें धृतराष्ट्र और संजय के संवाद रूप में कुछ श्लोक हैं, शेष कृष्ण और अर्जुन के संवाद के रूप में हैं। भगवद्गीता जैसा ग्रन्थ भारतीय साहित्य में दूसरा नहीं है। भारतीय मान्यता के अनुसार यह ईश्वर का मानव को उपदेश है। इसकी कई विशेषताएँ हैं जो और ग्रन्थों में नहीं मिलतीं। गीता संवाद - ग्रन्थ है। अतएव आदि से अन्त तक इसकी मार्मिक रोचकता का प्रभाव मन पर पड़ता है। यह मुख्यत: अध्यात्मविद्या का ग्रन्थ है। धम्मपद के समान नीति-विद्या तक यह सीमित नहीं। अध्यात्म से तात्पर्य मनुष्य के मन की उस समस्या से है, जो आत्मा के विषय में, उसके अमृत स्वरूप, आदि और अन्त के विषय में, शरीर और कर्म के विषय में, संसार और उसमें होने वाले अच्छे-बुरे व्यवहारों के विषय में, आत्मा और ईश्वर के पारस्परिक सम्बन्ध के विषय में, एवं मानवीय मन की जो ज्ञान, कर्म और भक्ति रूपी तीन विशेष प्रवृत्तियाँ हैं, उनके अनुसार किसी एक को विशेष रूप से स्वीकार करके सब प्रकार के जीवन व्यवहारों को सिद्ध करने और सबके समन्वय से जीवन को सफल, उपयोगी और आनन्दमय बनाने के विषय में उत्पन्न होती हैं। इस प्रकार के अत्यन्त उदात्त लक्ष्य और जिज्ञासा की पूर्त्ति, जिस एक शास्त्र से होती है वह भगवद्गीता है। इसकी शैली में कविता का रस है। इसके स्वर ऐसे प्रिय लगते हैं, जैसे किसी अत्यन्त हित मित्र की वाणी अमृत बरसाती है। इसमें उपनिषदों के समान वक्ता के प्रत्यक्षसिद्ध या स्वानुभव में आए हुए ज्ञान का वातावरण प्राप्त होता है।

विश्व के साहित्य में कर्मशास्त्र और मोक्षशास्त्र का ऐसा रसपूर्ण ग्रन्थ कोई दूसरा उपलब्ध नहीं है, जिससे गीता की तुलना की जा सके। धार्मिक मान्यता के अनुसार गीता साक्षात् भगवान् की वाणी है। मनुष्य को गीता जैसे मार्मिक ज्ञान की जीवन में बहुत बार आवश्यकता पड़ती है, जिसके प्रकाश में वह अपने संशयों को सुलझाकर अपने लिए कर्म करने या न करने का निश्चय कर सके। व्यक्ति के मन की और कर्म की शक्ति जितनी अधिक होती है, उसी के अनुसार उसका संशय उसे भीतर तक झकझोरता है और उसके समाधान के लिए उतने ही गम्भीर ऊहापोह और समाधान करनेवाले व्यक्ति की ऊँचाई की आवश्यकता होती है। हमें अर्जुन और कृष्ण के रूप में ऐसे ही शिष्य और गुरु के दर्शन होते हैं। भगवान् कृष्ण की वाणी वेदव्यास की पूर्णतम मन: समाधि से निष्पन्न हुई है। अतएव इसमें सन्देह नहीं कि गीता मानव के जीवन की मौलिक समस्याओं की व्याख्या करने वाला ऐसा परिपूर्ण काव्य है, जिसकी तुलना अन्य किसी दर्शन, धर्म, अध्यात्म या नीति के ग्रन्थ से करना सम्भव नहीं।

पहला अध्याय : अर्जुन का विषाद

'गीता' महाभारत का सर्वोत्तम अंश है। इस बड़े ग्रन्थ में जिसे शत-साहस्त्री संहिता कहते हैं और भी कितने ही तेजस्वी प्रकरण हैं, किन्तु गीता जैसी साभिप्राय और सुविरचित रचना दूसरी नहीं। गीता को महाभारतकार ने जिस संदर्भ में रखा है, इसका भी ग्रंथ की अर्थवत्ता के लिए बहुत महत्त्व है। गीता गुरु-पांडवों के युद्ध से पूर्व उस व्यक्ति से कही गई, जो दोनों पक्षों के क्षात्रबल का

सर्वश्रेष्ठ प्रतीक है, युद्ध की दृष्टि से अर्जुन पाण्डव पक्ष का सर्वश्रेष्ठ पात्र है। पाण्डवों के पक्ष में धर्म का आग्रह था। युद्ध आरम्भ करने से पूर्व अर्जुन का मन बहुत बड़े तनाव की स्थिति में आ गया था। मनुष्य की सोचने की, कर्म करने की, और चाहने की जितनी शक्ति है, उसकी भरपूर मात्रा जिस काम में उड़ेल दी जाय, वह युद्ध का रूप है। बाह्य शस्त्रों का प्रयोग और संहार तो उसका गौण पक्ष है। हम शस्त्रों का प्रयोग न भी करें तो भी मन का वैरभाव विनाश करा डालता है। अपने ज्ञान, कर्म और हृदय की भावना से युक्त होकर विपरीत परिस्थितियों का सामना करने के अनेक प्रसंग जीवन में आया ही करते हैं। जो व्यक्ति जितना महान् है, उसके लिए ऐसे प्रसंग भी उतने ही गम्भीर हुआ करते हैं। इस बिन्दु पर पहुँचकर मानव अपने पूरे व्यक्तित्व को समेट कर कर्म की भट्ठी में डाल देता है। पूर्व की घटनाओं ने अर्जुन को भी उसी मोड़ तक पहुँचा दिया था। उस बिन्दु से आगे उसके लिए दूसरा मार्ग न था। इसे ही युद्ध कहते हैं। यह युद्ध भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार का हो सकता है। दोनों में ही आत्माहुति वीर की एकमात्र गति होती है, वही उसके चलने का मार्ग अवशिष्ट रहता है, पलायन नहीं। ऐसे कठिन मोर्चे पर पहुँच कर अर्जुन का दृढ़ मन टुकड़े-टुकड़े हो गया। जिस धर्म के भाव ने उसे युद्ध के लिए आगे बढ़ाया था, उसी ने अर्जुन के मन को सन्देह से भर दिया। उसे ऐसा लगा मानो वह नीति-धर्म की हत्या के लिए बढ़ रहा हो। जिस राज्याधिकार के लिए युद्ध करना धर्म था, उस अधिकार की भावना को त्याग के भाव से क्षण त्रिलोकी का राज्य भी मुझे नहीं चाहिए। कृष्ण ने अर्जुन की इस डाँवाडोल स्थिति को क्लैब्य या नपुंसकता कहा। अर्जुन के लिए यह शब्द इसी अर्थ में सार्थक है कि उसकी जितना दुर्धर्ष कर्मशक्ति थी, उसे त्याग की इस झूठी भावना ने बिलकुल समाप्त कर डाला। वस्तुतः अर्जुन ने गीता सुनने के बाद स्वयं स्वीकार किया कि वह एक प्रकार का मोह या उसके मन पर छाया हुआ अंधेरा था। जिस धर्मनिष्ठ कर्त्तव्य के लिए अपने सारे जीवन को दाँव पर लगा दिया था, उसी में उसकी आस्था जाती रही और उसका मन संदेह से भर गया। यहाँ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि इस प्रकार का संदेह केवल अर्जुन को ही हुआ और किसी को नहीं। और किसी का मन इस प्रकार के विवेचन के लिए तैयार ही नहीं था। अर्जुन के संदेह का कारण यह नहीं कि वह धर्म का पथ छोड़कर अधर्म की ओर जाना चाहता था, बल्कि अब तक जिसे वह धर्म समझे था उससे और ऊँचे धर्म को पकड़ने का भाव उसके मन में आ गया। गीता का पहला शब्द 'धर्मक्षेत्रे' इस दृष्टि से सहेतुक है। अर्जुन का संकट दो धर्मों के बीच में है, धर्म और अधर्म की टक्कर में नहीं। अधर्म के आग्रह को तो वह बहुत आसानी से छोड़ सकता था, किन्तु जिस नए उच्चतर धर्म का आकर्षण उसके मन में भर गया, उस विचिकित्सा या संदेह को स्वयं जीतने की उसमें शक्ति न थी। अर्जुन के इस भाव को मनोवैज्ञानिक शब्दों में 'परमकृपा' कहा गया है।

अर्जुन के भीतर जो कृपा या अनुकम्पा का भाव भर गया था, वह उसी के सदृश था, जैसा बुद्ध, महावीर, भर्तृहरि आदि राजकुमारों के मन में संसार के प्रति उत्पन्न हुआ था। अर्जुन ने स्पष्ट कहा कि युद्ध की अपेक्षा भिक्षा का जीवन उत्तम है। सच तो यह है कि अर्जुन ने युद्ध न करने के पक्ष में जो युक्तियाँ दीं, वे अत्यन्त प्रबल हैं। उसने कहा, "हे कृष्ण, मुझे राज्य नहीं चाहिए, सुख नहीं चाहिए, भोग का जीवन नहीं चाहिए, युद्ध में विजय नहीं चाहिए।

यदि यह कहा जाय कि ये अधर्म का पक्ष लेकर आये हैं, तो मेरा यह कहना है कि सचमुच इन्होंने हम भाइयों के साथ और द्रौपदी के साथ घोर आततायीपन के काम किए हैं, किन्तु यह जानते हुए भी मैं इनका वध नहीं करूँगा। ये अंधे हैं, इन्हें अपना पाप दिखाई नहीं पड़ता।

अर्जुन ने सोचा- यह युद्ध महान पाप है। मेरा हित इसी में है कि मैं युद्ध न करूँ, भले ही कौरव मुझे मार डालें। ऐसी विचारधारा में उसने अपना धनुष-बाण डाल दिया। उसका चित्त इस नए वैराग्य धर्म से संमूढ हो गया और उसके भीतर बाहर शोक छा गया। उसने कृष्ण से कहा- मुझे अब नहीं जान पड़ता कि मेरा हित किसमें है? मेरा जो क्षात्र स्वभाव था वह जाता रहा। मैं आपका

शिष्य हूँ और नम्रता से आपकी शरण में आता हूँ। आप गुरु बनकर मुझे कल्याण मार्ग का उपदेश दीजिए। यही गीता के पहले अध्याय का सार है जिसे अर्जुनविषादयोग कहते हैं।

गीता की पुष्पिका

यहाँ हम पाठकों का ध्यान उस पुष्पिका की ओर दिलाना चाहते हैं जो गीता के प्रत्येक अध्याय के अन्त में पाई जाती है। वह इस प्रकार है- ओम् तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्स ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्ण ार्जुनसंवादे ऽर्जुनविषादयोगे नाम प्रथमोध्याय:।। १।।

इसमें अट्ठारह अध्यायों के नाम क्रम से बदल जाते हैं और शेष पुष्पिका वही रहती है। उसी की ओर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। इस पुष्पिका का पहला अंश ओम् तत्सत् है। यह सारी भारतीय संस्कृति का मूल सूत्र है। इसका सीधा सच्चा अर्थ है- ईश्वर अर्थात् ब्रह्म या भगवत्तत्त्व की ध्रुव सत्ता। इसीलिए गीता में कहा गया है- 'श्रीकृष्ण: परमात्मा देवता।' ओम् तत्सत् की ही व्याख्या यह है, अर्थात् इस महान् शास्त्र का देवता या चिन्मय तत्त्व परमात्मा या ईश्वर है, वही गीता का प्राण, श्वास-प्रश्वास या जीवन हैं। ईश्वर के लिए ही ओम्, तत् और सत् ये तीन शब्द प्रयुक्त हुए हैं। ईश्वर है, वह तत् या अव्यक्त है एवं वह सत्य है, यही ईश्वर के विषय में भारतीय दर्शन की मान्यता है। यह सारा विश्व और जीवन भौतिक है। यदि ईश्वर में श्रद्धा हो तभी विश्व और जीवन सार्थक है। और कोई संस्कृति चाहे जिस ढंग से सोचती हो, भारतीय संस्कृति का मूलाधार सत् तत्त्व ही है। यह विश्व भूत भौतिक सत् रूप है। इसके भीतर देव की सत्ता अनुप्रविष्ट है जिसके कारण विश्व और जीवन स्थायी मूल्य प्राप्त करते हैं। गीता सत् तत्त्व का प्रतिपादक शास्त्र है। यदि विश्व को असत् कहें तो जीवन की कोई समस्या ही नहीं है। एक ओर ब्रह्म है पर उसके लिए न कोई समस्या पहले थी, न आज है, न होगी। दूसरी ओर जड़ जगत् है। उसकी भी कोई समस्या नहीं। मृत्यु के साथ सब समस्याएँ समाप्त हो जाती हैं। जितनी समस्याएँ हैं वे अर्जुन रूपी नर के लिए हैं। ईश्वर और विश्व के बीच की और दोनों को जोड़ने वाली कड़ी नर है।

जीव की समस्याएँ दो प्रकार की हैं- एक भगवान् के साथ, दूसरी विश्व के साथ। नर और नारायण या मनुष्य और भगवान् के बीच की समस्याओं के समाधान का उपाय ज्ञान है और मनुष्य और विश्व की जितनी समस्याएँ हैं उनके समाधान का साधन कर्म है। दोनों ही मनुष्य के लिए आवश्यक हैं और दोनों के समाधान से ही मनुष्य का मन शान्ति या समन्वय प्राप्त करता है। यहाँ हम प्राचीन भारतीय शब्दावली का प्रयोग कर रहे हैं क्योंकि वह स्पष्ट और सुनिश्चित है और उसके पीछे एक महान् संस्कृति की अभिव्यंजना शक्ति है। हम चाहें तो ईश्वर के स्थान पर सत्य, न्याय, विश्वधर्म आदि नए शब्दों का भी प्रयोग कर सकते हैं किन्तु मूल बात में कोई अन्तर नहीं पड़ता।

ब्रह्मविद्या और कर्मयोग का समन्वय

ज्ञान और कर्म इन दोनों के लिए ही गीता की पुष्पिका में दो महत्त्वपूर्ण शब्द आए हैं- 'ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे। एक ओर ब्रह्मविद्या या अध्यात्म ज्ञान मानव के लिए अत्यन्त आवश्यक है, दूसरी ओर योगशास्त्र अर्थात् कर्मयोग भी उतना ही आवश्यक है। गीता ज्ञानरूपी समाधान की दृष्टि से ब्रह्मविद्या है, वही कर्मरूपी समाधान की दृष्टि से योग शास्त्र है। गीता में योग की दो परिभाषाएँ हैं, एक ज्ञानयोग या बुद्धियोग है, दूसरा कर्मयोग या केवल 'योग' है। गीताकार ने दोनों की अलग-अलग परिभाषाएँ दी हैं। ज्ञानयोग को समत्वयोग कहा है (समत्वं योग उच्यते, २, ४८)। कर्म की दृष्टि से कर्मों में कौशल या प्रवीण युक्ति को योग कहा है। ये दोनों भले ही अलग जान पड़ें पर गीता की दृष्टि में दोनों का समन्वय ही जीवन की पूर्णता के लिए आवश्यक है।

उपनिषदों का सार गीता

ऊपर कहा गया है कि गीता नर के लिए नारायण की वाणी है। यदि स्वयं ईश्वर कुछ कहे या उपदेश करे, तो वह क्या भाषा होगी? इसका उत्तर है कि वह गीत या कविता ही हो सकती है। ईश्वर की भाषा यह विश्व है जिसके द्वारा और जिसके रूप में जो कुछ उसके पास कहने के लिए था वह सब कुछ उसने कह दिया है। अतएव वेदों में विश्व को 'देव-काव्य' कहा है, जिसकी

भाषा और जिसके अर्थ

कभी पुराने नहीं पड़ते। कविता वह है जो बाह्य स्थूल वस्तु या शब्द के भीतर छिपे हुए अर्थ को प्रकट करती है। इसीलिए कवि को क्रान्तदर्शी कहते हैं। कवि अर्थ को देखता है। अर्थ ही ब्रह्म है, शब्द भौतिक विश्व है। शब्द अर्थ को प्रकट करने वाला काव्य है। शब्द प्रकट है, अर्थ रहस्य है। इसीलिए अर्थ को 'उपनिषद' कहा है। यह गीता स्थूल दृष्टि से शब्दों में निबद्ध गीत या कविता है किन्तु अर्थ की दृष्टि से यह महान् रहस्य या उपनिषद् है। जो गुह्य अर्थ है वही अध्यात्म है। वह एक अनबूझ पहेली है। इसलिए उसे संप्रश्न भी कहते हैं। यह रहस्य ही ब्रह्मविद्या है। भारतीय संस्कृति ने आरम्भ में ही इस ब्रह्मविद्या या रहस्य ज्ञान को जिस वाङ्मय द्वारा प्रकट किया उसी की संज्ञा वेद है। कालान्तर में वेद के ही ज्ञान को वेदारण्यक या उपनिषद् या वेदान्त भी कहने लगे। ये सब शब्द साहित्य में प्रयुक्त हुए हैं। 'वेदान्तेषु यमाहुरेकपुरुषं व्याप्य स्थितं रोदसी' कालिदास के इस वाक्य में उपनिषदों की ही परम्परा को वेदान्त कहा है। ब्रह्मसूत्र तो साक्षात् उपनिषदों की अध्यात्मविद्या की ही व्याख्या करने के लिए हैं। इसी दृष्टिकोण से पुष्पिका में गीता के ज्ञान को उपनिषद् कहा गया है। जो उपनिषदों का अर्थ है वही गीता में है। उपनिषद् गौएँ हैं गीता उनका अमृत दूध है। जैसा हम आगे देखेंगे वेद और उपनिषदों की शब्दावली या भावों का हवाला देते हुए गीताकर ने अपने विचार प्रकट किए हैं। क्षर, अक्षर, क्षेत्र, क्षेत्रज्ञ, ऊर्ध्व, अधः, अश्वत्थ आदि ऐसे ही शब्द हैं। जो गीता को समझना चाहे उसे वेद विद्या तक पहुँचने के लिए अपने मन को तैयार रखना चाहिए। यदि यह ठीक है कि उपनिषदों की मलाई गीता में आई है तो जिस दूध की वह मलाई है उसे परिचित होने के लिए भी हमारे मन में उमंग होनी चाहिए। गीता में जितना स्थान कर्मशास्त्र को है उतना ही ब्रह्मविद्या को है। गीता के लिए ब्रह्म के बिना कर्म की कोई स्थिति नहीं। ब्रह्मशून्य लिए कर्म बंधन या केवल श्रम है। इस प्रकार गीता की पुष्पिका उसे समझने के तीन स्पष्ट सूत्र हमें देती है। पहला यह कि विश्व और मनुष्य दोनों का मूल एक सत् तत्त्व है। दूसरा यह कि ज्ञान और कर्म दोनों ही गीता के विषय हैं और दोनों ही मनुष्य के लिए आवश्यक हैं। एवं तीसरा यह कि गीता का यह उपदेश ईश्वरीय ज्ञान या दिव्य ज्ञान के अनंत स्रोत वेदों और उपनिषदों का निचोड़ है। वेद और उपनिषद् भारतीय अध्यात्मविद्या, ब्रह्मविद्या या सृष्टिविद्या के स्रोत हैं। इस क्षेत्र में प्राचीन भारत के मनीषियों ने जो सशक्त और उदात्त चिन्तन किया था उसका सार गीता है। किसी अन्य शास्त्र के खण्डन-मण डन में गीता को रुचि नहीं। उसका उद्देश्य भारतीय ज्ञान का मथा हुआ मक्खन प्रस्तुत करना है। गीता की शैली और भाव दोनों मधुर रस से ओत-प्रोत हैं, अतः वह मानव के हृदय की निकटतम भाषा है।

दूसरा अध्याय : सांख्ययोग

विषाद की चरम सीमा पर पहुँचे हुए अर्जुन के लिए ज्ञान और कर्म दोनों की ही शक्ति क्षीण हो चुकी थी। किन्तु अर्जुन ने जो कहा उससे प्रकट होता है कि वह अपने लिए निवृत्ति का मार्ग चुनना श्रेयस्कर मान रहा था। उसके तर्कों में सार नहीं था, क्योंकि उनकी उसके जीवन के साथ असंगति थी। अतएव सर्वप्रथम आवश्यक था कि उसके उन हेत्वाभासों का कुहासा या आवरण दूर किया जाय और निवृत्ति धर्म का जो सच्चा स्वरूप है उसकी व्याख्या की जाय। यही गीता के दूसरे अध्याय का विषय है।

सर्वप्रथम भगवान् ने प्रज्ञादर्शन के दृष्टिकोण से अर्जुन के विचारों की समीक्षा की। प्रज्ञादर्शन का आधार मनुष्य की बुद्धि या व्यवहार में काम आनेवाली समझदारी है। चाहे जैसी परिस्थिति हो प्रज्ञा ही मनुष्य का सहारा है। हम पहले कह चुके हैं कि प्राचीन युग में प्रज्ञादर्शन नाम का एक विशेष दृष्टिकोण था जिसकी विस्तृत व्याख्या उद्योग पर्व के अन्तर्गत विदुर नीति में आ चुकी है। प्रज्ञा, पञ्जा, पण्डा, ये तीनों बुद्धि के पर्याय हैं। प्रज्ञावादी को लोक में पण्डित भी कहते थे। कृष्ण प्रज्ञावादी थे और अर्जुन का भी दृष्टिकोण यही था। इस शास्त्र का दृष्टिकोण यह है कि जीवन में मध्यमार्ग का आश्रय लिया जाय। इसके अनुसार अध्यात्म और जीवन ये दोनों विरोधी तत्व नहीं।

(साभार : गीता नवनीत)

श्रीगीता जयन्ती पर विशेष...

श्रीमद्भगवतगीता और आज की प्रासंगिकता

■ अभिनव गुप्त

भगवान कृष्ण ने अपनी साक्षात वाणी के माध्यम से हमें जीवन चक्र व कर्म के संदर्भ में जो ज्ञान प्रदान किया, वह गीता ज्ञान कहलाता है। कुरुक्षेत्र की रणभूमि में जब अर्जुन अपने शत्रुओं के रूप में परिजनों को देख कर मोह- ग्रस्त हो गए, तब प्रभु ने उनको गीता रुपी अमृत का पान कराया। यही गीता उपदेश आज भी पथ प्रदर्शक बनकर मानव जाति को प्रेरित कर रहा है। गीता ज्ञान के सम्बन्ध में कहा गया है कि इस अमृत सागर के पास जो भी जाएगा, वह अपनी तृप्ति और शांति के लायक अपना पात्र भर कर ले आएगा। इस ज्ञान-सागर से कोई भी प्यासा नहीं लौट सकता।

भगवान श्री कृष्ण के मुख से यह गीता रुपी अमृत-धारा माघ शुक्ल पक्ष एकादशी के दिन प्रकट हुई थी। इस पवित्र दिन को गीता जयंती के रूप में मनाया जाता है। गीता जी के संदर्भ में यह जानना बहुत आवश्यक है कि यह पवित्र ग्रंथ किसी विशिष्ट पंथ, संप्रदाय, जाति विशेष के लिए नहीं है। यह एक ऐसा ग्रंथ है, जिसका जन्म संपूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए हुआ है। गीता जी में निहित संदेश सभी प्रकार के लोगों को जीवन व्यवहार की प्रेरणा देते हैं। आवश्यक है कि सभी इसे समझ कर जीवन में व्यवहारिक रूप से अपनाने का प्रयास करें।

आज हमारी लगभग वही स्थिति है जो कभी अर्जुन की थी। हम सामाजिक, ऐतिहासिक, आर्थिक व सांस्कृतिक रूप से क्षीण हो चुके हैं। भौतिक भोग-विलास व लोभ की पराकाष्ठा ने हमें आसुरी वृत्तियों से ओतप्रोत कर दिया है। हमारी हर प्रकार से आध्यात्मिक अवनति हो रही है। मनुष्य ने स्वयं ही अपने महाविनाश के बीज को रोपा है। मानव की हिंसात्मक प्रवृत्ति ने समाज को क्षीण करना प्रारंभ कर दिया है। आज मनुष्य अर्जुन के समान विषाद की स्थिति में है। विषाद की अवस्था में बुद्धिमान व कर्मठ व्यक्ति भी अपने कर्तव्य से चूकने लगता है। अपने वास्तविक कर्म क्षेत्र से भाग जाना अथवा मुँह चुराना ही उसे ठीक लगने लगता है। भाग जाने की यह प्रवृति उसके द्वारा अर्जित सभी उपलब्धियों के लिए भी घातक है। अतः इस स्थिति में मानव की अवस्था एक कायर की भांति हो जाती है।

गीता में प्रभु ने कहा है कि परमात्मा सभी में है और सब परमात्मा में है। इस प्रकार हमें त्याग भावना से सभी को अपने समान परमात्मा का अंश मानकर चलना चाहिए। यदि मानव जाति को यह बात समझ में आ जाए कि जो चेतना हमारे शरीर का संचालन कर रही है, वही चेतना सभी प्राणियों के अंदर निहित है, तो आपसी प्रेमभाव निश्चित ही बढ़ेगा। आज प्रत्येक मनुष्य अपने अधिकारों के पीछे तो भाग रहा है परंतु उसकी कर्तव्य-परायणता लुप्त हो जा रही है। अधिकारों की दौड़ में ही दुर्भावना उसके मन में घर कर रही है। सच तो यह है कि कर्तव्य-परायणता के अभाव के कारण ही हमारे देश व समाज का विकास नहीं हो पा रहा। गीता जी में केवल अधिकार का ही नहीं अपितु कर्तव्य का वर्णन भी किया गया है। श्रीकृष्ण ने स्वयं कहा है कि कर्तव्य ही तेरा अधिकार है और कर्तव्यनिष्ठा स्वयं में ही पुरस्कार है। वस्तुतः हमारे अंदर जब कर्तव्य की भावना का समावेश हो जाएगा तो संसार की अनेक बुराइयों का स्वतः ही खात्मा हो जाएगा। इस प्रकार गीता जी ज्ञान के अथाह समुद्र के समान हैं। इस सागर की

गहराई में जिज्ञासु जितना उतरने का प्रयास करता है, उतना ही उसके तत्व रहस्य-ज्ञान को प्राप्त करता जाता है। इस समुद्र में ज्ञानरूपी मोती भरे पड़े हैं। जिनका कभी समापन नहीं हो सकता।

भगवान ने अपनी वाणी में सत्य को शाश्वत बताया है। उन्होंने कहा है कि सत्य और असत्य का परस्पर द्वन्द अपने अपने अस्तित्व की स्थापना के लिए होता है। असत्य की सत्ता जब सत्य के अस्तित्व से टकराती है तो भयानक परिणाम उत्पन्न होने लगते हैं। परंतु सत्य असत्य के इस संघर्ष में सत्य की विजय होना सनातन सत्य है। सत्य दैवी प्रकृति और आध्यात्मिक चेतना का परिवर्तनशील प्रकाश पुंज है। जबकि असत्य की आसुरी अवचेतना प्रकृति का अंधकार है। अतः असत्य की कोई सत्ता ही नहीं है। यही सत्य नैतिकता-अनैतिकता, धर्म-अधर्म, दैवी-आसुरी सम्पदा के संबंध में भी है। गीता जी हमें धर्म संकट से मुक्त होकर सत्य को पहचानने का दिव्य संदेश प्रदान करती हैं। आज के परिपेक्ष में गीता जी की सार्थकता को समझने की परम आवश्यकता है। ❐

(737,सेक्टर-7, अम्बाला शहर)

अहंकार का नाश

कालिदास बोले, 'माते, पानी पिला दीजिए बड़ा पुण्य होगा।' स्त्री बोली, 'बेटा मैं तुम्हें जानती नहीं, अपना परिचय दो। मैं अवश्य पानी पिला दूंगी।' कालिदास ने कहा मैं पथिक हूं, कृपया पानी पिला दें। स्त्री बोली, 'तुम पथिक कैसे हो सकते हो! पथिक तो केवल दो ही हैं सूर्य व चन्द्रमा, जो कभी रुकते नहीं हमेशा चलते रहते हैं। तुम इनमें से कौन हो सत्य बताओ।'

कालिदास ने कहा, 'मैं मेहमान हूं, कृपया पानी पिला दें।' स्त्री बोली, 'तुम मेहमान कैसे हो सकते हो? संसार में दो ही मेहमान हैं- पहला धन और दूसरा यौवन। इन्हें जाने में समय नहीं लगता। सत्य बताओ कौन हो तुम?'

(अब तक के सारे तर्क से पराजित हताश तो हो ही चुके थे)

कालिदास बोले, 'मैं सहनशील हूं। अब आप पानी पिला दें।' स्त्री ने कहा, 'नहीं, सहनशील तो दो ही हैं- पहली, धरती जो पापी-पुण्यात्मा सबका बोझ सहती है। उसकी छाती चीरकर बीज बो देने से भी अनाज के भंडार देती हैं, दूसरे पेड़ जिनको पत्थर मारो फिर भी मीठे फल देते हैं। तुम सहनशील नहीं। सच बताओ तुम कौन हो?'

(कालिदास लगभग मूर्च्छा की स्थिति में आ गए और तक-वितर्क से झल्लाकर बोले)

कालिदास बोले, 'मैं हठी हूं।' स्त्री बोली, 'फिर असत्य, हठी तो दो ही हैं-पहला नख और दूसरे केश, कितना भी काटो बार-बार निकल आते हैं। सत्य कहें ब्राह्मण कौन हैं आप?' (पूरी तरह अपमानित और पराजित हो चुके थे) कालीदास ने कहा, 'फिर तो मैं मूर्ख ही हूं।'

स्त्री ने कहा, 'नहीं तुम मूर्ख कैसे हो सकते हो। इस संसार में मूर्ख दो ही हैं-पहला राजा, जो बिना योग्यता के भी सब पर शासन करता है, और दूसरा दरबारी जो राजा को प्रसन्न करने के लिए गलत बात पर भी तर्क करके उसको सही सिद्ध करने की चेष्टा करता है।'

(कुछ बोल न सकने की स्थिति में कालिदास वृद्धा के पैर पर गिर पड़े और पानी की याचना में गिड़गिड़ाने लगे)वृद्धा ने कहा, 'उठो वत्स! (आवाज सुनकर कालिदस ने ऊपर देखा तो साक्षात् माता सरस्वती वहां खड़ी थीं। कालिदास पुनः नतमस्तक हो गए।'

माता ने कहा, 'शिक्षा से ज्ञान आता है न कि अहंकार। तूने शिक्षा के बल पर प्राप्त मान और प्रतिष्ठा को ही अपनी उपलब्धि मान लिया और अहंकार कर बैठे इसलिए तुझे तुम्हारे चक्षु खोलने के लिए ये स्वांग करना पड़ा।' कालिदास को अपनी गलती समझ में आ गई और भरपेट पानी पीकर वे आगे चल पड़े।

शिक्षा:- विद्वत्ता पर कभी घमण्ड न करें, यही घमण्ड विद्वत्ता को नष्ट कर देता है। दो चीजों को कभी व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए- अन्न के कण को और समय के क्षण को। ❐

सर्व-सार ओंकार

■ इन्दिरा मोहन

ज्ञान की दिव्य ऊर्जा से पूर्ण ओंकार मात्र नाद नहीं, मंत्र नहीं, प्रार्थना नहीं, विश्व चेतना की सनातन ध्वनि है जो सत्ता की गुप्त गहराइयों से स्पन्दित होकर ब्रह्माण्ड के कण-कण में गूँज रहा है। इस से जुड़ना सत्य के अस्तित्व से जुड़ना है, चिद् के ज्ञान से जुड़ना है और शिवत्व के आनन्द से जुड़ना है। सर्व व्यापक चेतना एक है। यही सब प्राणियों में अखंड रूप से व्याप्त है–इस चेतना का प्रतीक है ऊँ। यह भक्ति भी है ज्ञान भी, नाम भी है नामी भी साधन भी है साध्य भी। इस महिमामय, उल्लास पूर्ण ध्वनि के सहारे भगवान को पाना एवं अपनी चेतना में अपने कार्यों में उसे पूर्णतया प्रकट करना सम्भव है– हम इसी पृथ्वी पर दिव्य जीवन को अभिव्यक्त कर सकते हैं।

सम्पूर्ण सृष्टि के मूल में नाद है, जैसे मिट्टी के मूल में पानी, पानी के मूल में गर्मी (तेज), गर्मी के मूल में गति (वायु), गति के मूल में आकाश और आकाश के मूल में है शब्द। उसी प्रकार कम्पन का आधार भी शब्द है। इस कम्पन से ही वायु, अग्नि आदि तथा सूर्य, चन्द्रमा सहित पशु-पक्षी मनुष्य में गति है, ऊर्जा है, संसरण है। यह सारा हिलना, कम्पन, जिस शब्द से होता है उस शब्द का नाम है ओंकार।

अपनी सारी प्रवृत्तियों का मन सहित विरोध करने पर घंटे की गूँज जैसी ध्वनि सुनाई पड़ती है वही सृष्टि का मूल है, लौकिक सृजन की आवाज है। वैज्ञानिकों का मानना है कि प्रकृति के अन्तराल में एक ध्वनि प्रतिक्षण गुँजायमान होती रहती है, जिसके कारण परमाणुओं में पारस्परिक संघात द्वारा गति उत्पन्न होती है और सृष्टि का समस्त क्रिया कलाप चलता है–यह ध्वनि ॐ है, जिसे योग सूत्र में वाचक शब्द 'प्रणव' कहा गया है।

वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति अपनी देह में परम आत्मा का प्रकाश लिये हुए है–वह तो चलता फिरता मन्दिर है जहाँ ज्ञान, शान्ति और सुख का अनन्त प्रकाश झिलमिला रहा है। ॐ उस मन्दिर में प्रवेश का सबसे सरल, स्वाभाविक उपाय है। समग्र सनातन धर्म में ओम् का विशेष महत्त्व है। ॐ का चिन्तन, ॐ का दर्शन, ॐ का उच्चारण भारत की पुण्य-भूमि में सदियों से जीवन को अपने अंक में समेटे हुए है। ॐ परमात्मा का सबसे निकट का नाम है। इसी को सामवेदी उद्गीथ यजुर्वेदी प्रणव और अर्थवेदी ओंकार कहते हैं। सारे मंत्रों के अन्दर ॐ अनुस्यूत है। सारे वेदों में प्रणव व्यापक रूप से विद्यमान है। बौद्ध, जैन, सिख, आर्य समाज तथा निर्गुण सन्तों में भी ओंकार के प्रयोग की परम्परा है। मन में कई बार शंका उठती है कि भगवान का कोई भी नाम लें, क्या अन्तर पड़ता है, आखिर ॐ में ऐसी क्या विशेषता है? विभिन्न नामों के द्वारा तत्-तत् देवताओं का साक्षात्कार हो सकता है लेकिन आत्मा और ब्रह्म की एकता समझना ओंकार के द्वारा ही सम्भव है। ओंकार का अनुसन्धान करने पर जो परमात्मा है वही ओम् है और जो ओम् है वही परमात्मा है–यह निश्चय हो जाता है। तभी तो यह सभी मंत्रों के आरम्भ में लगाया जाता है जैसे ॐ नमः शिवाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ॐ रां रामाय नमः। सबसे प्रधान गायत्री मंत्र भी ॐ से प्रारम्भ होता है। यह भी ॐ की प्रधानता को बताता है। जैसे विष्णु आदि की मूर्ति उनका प्रतीक है, वैसे ब्रह्म का प्रतीक ॐ है। इससे सम्पूर्ण वाणी व्याप्त है। अक्षर का सम्बन्ध ध्वनि से है। ध्वनि का प्रभाव हमारे तन-मन और चेतन तक जाता है। अक्षर ध्वनि पर सवार होकर ही यात्रा करता है। सब भाषाओं के पार, सोच-विचार के पार, पूर्ण शान्त मन के द्वारा परिपूर्ण मौन में ॐ की ध्वनि सुनी जा सकती है। जो मनीषी अपने भीतर गये हैं, उन्होंने हमेशा एक अद्भुत ध्वनि

सुनी है जिसे अपने अस्तित्व की ध्वनि भी कहा जा सकता है। हम स्वयं और सारा विश्व उसके अस्तित्व के सनातन साक्षी हैं। वह हमारे भीतर ही विद्यमान है। हमें सागर तल को नापने और आकाश छूने की जरूरत नहीं, उस तक पहुँचने के लिये न स्वर्गारोहण की जरूरत है, न पाताल खोजने की। केवल ओंकार द्वारा आत्मा को साधने की जरूरत है। ओंकार की स्वतन्त्र पवित्रता, आत्म विचार की समस्त बाधाओं को निरस्त कर सभी सम्प्रदायों एवं मतों की बुनियादी एकता का दर्शन करा देता है। इसके अनुवर्तन के द्वारा हम राख के ढेर की अपेक्षा अग्नि की तरह ज्योतिमान, प्रकाशवान होकर मानव जीवन के रूप में प्राप्त सुअवसर का लाभ उठा सकते हैं।

वस्तुतः ब्रह्म ही सर्व रूप है लेकिन जब तक प्रणव पर चित्त स्थिर न हो जाए तब तक ब्रह्म का बोध ही संभव नहीं कि उसे सर्वरूप समझ सकें। ओम् की सर्वरूपता इस साधना में अपूर्व सहयोगी सिद्ध है। परमात्मा सर्वात्मा है उसका बोधक तथा प्रतीक होने से ओंकार को सर्वात्मा समझना एवं कहना दोनों संगत है। सारी शब्द सृष्टि का आस्पद ॐ है, सारी सृष्टि का आस्पद ब्रह्म है। अतः ब्रह्म और ओंकार अलग-अलग नहीं हो सकते। परमात्मा की प्राप्ति के लिये जितने भी उपाय, विधान, साधन हैं, उन सबका मूर्धन्य है ओम्। इसके आलम्बन से विद्वान समर्पित साधक, उस लोक को प्राप्त होता है जो शान्त, अजर-अमर, अभय एवं सबसे परे है, श्रेष्ठ है। वास्तव में विभिन्न ऊर्जा क्षेत्रों से स्पन्दित ओंकार ब्रह्माण्ड का शक्ति-धाम है, यही ईश्वर है। निसन्देह यह परमात्मा की प्राप्ति का माध्यम है, अमरता का प्रवेश द्वार है।

ईश्वर एक है। उसके जैसा कुछ नहीं और न ही उससे कुछ भिन्न है। यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उसी से जन्मा है अतः संसार में जो कुछ भी है, उसी का रूप है, वह स्वयं है। ईश्वर, जीव और जगत-भगवान, मनुष्य और संसार—ये तीन अलग-अलग चीजें नहीं, ये वास्तव में एक ही हैं—लहर सागर से न तो भिन्न है न अलग। वेदान्त के इस सत्य को शंकराचार्य जी इस प्रकार कहते हैं—''ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या जीवों ब्रह्मैव ना अपराः वह अनन्त सत्ता मात्र है। इन्द्रियों के द्वारा अनुभूत संसार भ्रम है तथा 'जीव' अथवा यह सीमित 'अहं' वस्तुतः वही अनन्त सत्य है, उससे अन्यथा नहीं। सत्य जैसा है वैसा देखना यथार्थ दर्शन है, तत्त्व दर्शन है। वस्तु पर रंग करके, उस रंग को देखना यथार्थ दर्शन नहीं है। सारी रेखाओं की सीमाओं के पीछे छिपी एकसूत्रता को देखना होगा जिसमें भिन्न-भिन्न रूप-रंग के मनके पिरोये गये हैं—यही तत्त्व दर्शन है।

ओंकार के अर्थपूर्ण चिन्तन-मनन ने यह सिद्ध कर दिया कि 'मैं' ही इस समग्र जगत का एकमात्र कारण है, 'मैं' ही सारे जगत रूप में बना है और मैंने ही यह बनाया है। ॐ के सम्यक चिन्तन से ''मैं शरीर हूँ'' इस सीमित सोच की निवृत्ति हो जाती है, जैसे ही यह भाव हटा फिर अविद्या न थी, न है और न रहेगी। किंचित भेद की सम्भावना को हटा कर ॐ अनन्यता का अखंड बोध जगा देता है।

मन ज्यों-ज्यों सूक्ष्म होता जाता है, उसकी उच्चतर श्रेणी की उपासना-क्षमता भी बढ़ती जाती है। जैसे हम अपनी खुली आँखों से आकाश देखते हैं वैसे ही अपने प्रज्ञा-चक्षु से ज्ञानी ईश्वर को देख लेता है।

वास्तव में किसी अन्य ने नहीं, भगवान ने अपने अन्दर से इस संसार को बनाया है। भगवान अपनी दुनिया से बाहर ही नहीं है। उसने दुनिया बनाई नहीं, वह दुनिया बन गया—कच्चा माल भी वही, उपकरण भी वही, बनने वाला भी वही, बनाने वाला भी वही। उपनिषद् में कहा गया है.... वह विद्या और अविद्या, सत्य और असत्य बन गया। जो कुछ भी विद्यमान है, वही सब बन गया है। सबमें उसकी ही आत्मा है जिसे प्रकृति ने भिन्न-भिन्न देहों में ढाल दिया है। उपनिषद् कहती है—सर्वत्र उस आदि एकता को देखने के बाद शोक कैसा? मोह कैसा? वह परम सुख है जो निरन्तर बना रहता है, उसके कोई परिवर्तन नहीं होता। ❐

माँ, माँ है, मित्र नहीं

■ मृदुला सिन्हा

समय के साथ परिवार व समाज के जीवन मूल्यों और मान्यताओं को भी बदलने के प्रयास चलते रहते हैं। हाल ही में सिडनी के एक परिवार चिकित्सकीय मनोवैज्ञानिक श्री स्टेफन पॉल्टर ने कहा है– ''माँ की बदलती भूमिका के अनुसार कई शब्द और रूप इजाद किए गए हैं। इनमें 'अच्छी मित्र माँ, अधिक लोकप्रिय हो रही है।' अर्थात् आज माँयें अपने बच्चों की अभिभावक नहीं मित्र बन रही हैं। मनोवैज्ञानिक का अवलोकन है कि माताएं अपने शरीर को चुस्त-दुरुस्त रख कर जवान बने रहने का प्रयास करती हैं। वे मन से भी जवान दिखने की कोशिश करती हैं। ताकि अपने बच्चों के साथ पार्टी में उनके चित्र दिखें। वे अपने जवान बेटा-बेटी के साथ शराब पीतीं, खेलती- कूदती, उनके जैसे ही कपड़े पहनती हैं।

पॉल्टर ने अपनी पुस्तक 'दि मदर फैक्टर' में बहुत से उदाहरण देकर बताया है कि आज माता-पिता बच्चों से फजूल का विवाद खड़ा नहीं करना चाहते। अधिक समय दफ्तरों में काम करके थके हारे लौटने पर वे बच्चों को 'यह करो', 'यह न करो' की आज्ञा नहीं देना चाहते। दरअसल बच्चों के लिए उपयुक्त समय नहीं निकाल पाने के कारण उनके बच्चे उन्हें अपने हाथों से खिसकते नजर आ रहे हैं। बच्चों पर उनका कोई नियंत्रण नहीं। वे उन्हें सम्मान नहीं देते। इसलिए वे अब अभिभावक की भूमिका छोड़ मित्र बन रहे हैं।

दूसरी ओर यू.एस. कोमेडियन क्रिस रॉक नामक संस्था की जन्मदातृ रोज रॉक का मत है– ''बच्चों को माँ चाहिए। अपने दस और सत्रह दूसरे बच्चों का पालन-पोषण कर अभिभावक का अनुभव प्राप्त करने के बाद उनका विचार है कि माँ का मित्र बन जाना बच्चों को माँ विहिन कर जाता है। इसके कारण उनका स्वभाव बड़ा उग्र हो जाता है।'' उन्होंने इस प्रकार के अभिभावकत्व के बदलाव के दुष्परिणामों के प्रति भी सचेत किया है।

रोज रॉक ने अपनी दूसरी पुस्तक 'ममा रॉकग्स रूल्स' में बच्चों के पालन पोषण के लिए दस नियम बताया है। उन्होंने पहला नियम 'अपने बच्चे की मां बनो, मित्र नहीं' कहा है। उनका मत है कि आज माता-पिता के पास अपने बच्चों के लिए समय नहीं है। बच्चे बिगड़ रहे हैं। माता-पिता के साथ संबंध अस्वस्थ हो रहा है। इसलिए वे जल्दबाजी में यह बदलाव ला रहे हैं। परन्तु माँओं को बच्चों की अच्छी मित्र बनकर उन्हें मातृत्व से वंचित नहीं करना चाहिए। अभिभावक को अपने बारह वर्ष के बच्चे के बारह वर्षीय मित्र बनना आवश्यक नहीं है। बच्चों को तो अभिभावक, मार्गदर्शक और संरक्षक चाहिए। प्रेरणादायी भी। शिशुओं के लिए तो माँ ही भगवान का रूप होती है।

पश्चिमी देशों के मनोवैज्ञानिकों की चिंता, चिंतन और चेतावनी को पढ़कर मुझे दिल्ली की अपनी मित्र और उसके बेटे के बीच का प्रसंग स्मरण हो आया। प्रसंग पच्चीस वर्ष पुराना है। बेटा सोलह वर्ष का हो गया था। माँ को उसने बचपन से साड़ी में ही देखा था। पर इधर उसकी माँ बाल छोटा करवाए, एक दिन जिंस शर्ट में बेटे के स्कूल चली गई। बेटे के मित्रों ने पूछा- ''यह तुम्हारी दीदी है?'' वह वहां तो चुप रहा। घर आकर बड़ा नाराज हुआ। वह अपनी माँ को माँ के रूप में देखना चाहता था। दीदी या मित्र की वेशभूषा में नहीं।

सच तो यह है कि भारतीय चिंतन और व्यवहार में भी माँ एक वेशभूषा नहीं, एक भाव है। आदरणीय है। सम्माननीय। जिसका भय भी हो और आत्मीय संबंध भी। उससे कुछ भी छुपाया नहीं जाए पर सब कुछ बताया भी नहीं जाए। एक कहावत है-

अम्मा मिले तो खुल के बतिआऊँ।
गंगा मिले, डूब के नहाऊँ।

अभिभावक एक वचन शब्द है। परन्तु उसमें दोनों समान हैं। इसलिए कि एक डांटता है, दूसरा पुचकारता है। एक भय उत्पन्न करता है दूसरा मित्रवत व्यवहार करता है। बच्चे के लालन-पालन में अभिभावक की दोनों इकाइयों की भूमिकाएं अनिवार्य हैं।

''माता न कुमाता हो सकती, हो पुत्र-कुपुत्र भले जग में।'' माँ और उसकी संतानों के बीच के संबंध को दर्शाने के लिए ऐसे बहुत से शुभाशीत हैं। ये शुभाशीत बार-बार दुहराए जाने के कारण जनमानस में भी समाए हुए हैं। संतान कुसंतान होते हैं। पर माँ, कुमाता नहीं हो सकती। अपवाद तो हर युग में रहे हैं। परन्तु शायद ही किसी ने कभी माँ और संतान के बीच मित्र भाव को देखा हो। दरअसल मित्र, मित्र होता है। माँ नहीं हो सकता। दोनों संबंधों के बीच प्रेम आवश्यक तत्व है। पर दोनों के प्रेम की तासीर में अंतर होता है। दो मित्रों के बीच एक की बेईमानी होने से मित्रता टूट जाएगी। एक पाए पर मित्रता नहीं टिक सकती। दोनों पाए मजबूत होने चाहिए।

केरल के समाज में एक कथा प्रवाहित है। एक माँ और उसके जवान पुत्र साथ-साथ रहते थे। वह पुत्र प्रतिदिन अपनी माँ की पिटाई करता था। माँ बिना कुछ बोले बेटे की मार सहती और उसके लिए भोजन बना कर देती। एक बार वह नौजवान रोजगार करने गांव से बाहर गया। छः महीने बाद काम करके लौटा। एक दो दिनों तक वह माँ को मारना भूला रहा। तीसरे दिन उसने फिर माँ की पिटाई की। माँ जोर-जोर से रोने लगी। आसपास के लोग भी जुट गए। बेटे को धिक्कारा। उस नौजवान ने कहा- ''मेरे लिए कोई नई बात नहीं है। मैं तो पहले भी इसकी पिटाई करता रहा हूँ। तब तो आप में से कोई नहीं आया। आज क्या बात है?''

उन लोगों को बड़ा अचम्भा हुआ। बेटे को बात समझ में आई। उसने माँ से पूछा- ''मार खाने पर पहले तो तुम रोती चिल्लाती नहीं थी। अब क्यों रोई?''

माँ ने कहा- ''बेटा! पहले जब तुम मुझे मारते थे तो मुझे चोट लगती थी। तुम्हारे हाथों में ताकत थी, जानकर मैं प्रसन्न रहती थी। पर छः महीने बाहर रहकर तुम कमजोर हो गए हो। आज तुम्हारे मारने से मुझे चोट नहीं लगी। मैं इसलिए रो रही हूं।''

सब लोग सुनकर दंग रह गए। एक महिला ने कहा- ''माँ की जी गाय, पुत्र की जी कसाई।'' (माँ के भाव गाय के समान होता है और पुत्र के भाव कसाई) ऐसी अनेकों कहावतें प्रचलित हैं जो मातृत्व भाव के आदर्श प्रगट करते हैं।

माँ एक व्यक्तित्व है। पर मातृत्व एक भाव है। माँ और उसकी संतान को समभाव में नहीं लिया जा सकता। उन्हें सम स्थान पर नहीं रखा जाता है। मित्र के बीच समानताओं का होना आवश्यक है। किसी न किसी प्रकार की समानता होनी चाहिए तभी मित्रता टिकाऊ होती है।

भारतीय वांग्मय में मातृत्व भाव को विस्तार दिया गया है। ''माता पृथ्वी, पुत्रो अहंपृथ्वा'' अर्थात् पृथ्वी हमारी माता है, हम उसकी संतान हैं। यहाँ माँ बहुत बड़े फलक पर आती हैं पृथ्वी हमारी जीवनाधार है। वे हमें जीवन देती हैं। परन्तु यदि हम पृथ्वी का अनादर करते हैं, क्षिति, जल, अग्नि, पेड़ पौधों का दोहन करते हैं तो पृथ्वी हमें सजा देती है। माता-पिता का काम अनुशासन देना भी है। इसलिए पृथ्वी हमारी माँ है। हमने तो गाय और गंगा को भी माँ माना है। मात्र मान्यता नहीं, हमारे जीवन व्यवहार में पृथ्वी, गंगा और गाय की पूजा होती रही है। हमारी दैनंदिनी में पृथ्वी, गंगा, गाय और अपनी माँ के प्रति श्रद्धा के भाव व्यवहार में प्रगट होते रहे हैं। प्रातःकाल विछावन छोड़ते हुए पृथ्वी पर पांव रखते हुए पृथ्वी को, गंगा में प्रवेश के पूर्व गंगा को, गाय दूहने से पूर्व गाय को प्रणाम करना, ये सारी दैनंदिनी हमें उनके प्रति श्रद्धा भाव को मजबूत करती थीं। क्योंकि हम उनके दाय से उऋण नहीं हो सकते।

मित्र के लिए ये सारे अनुष्ठान नहीं होते। मित्रवत व्यवहार होते हैं। पश्चिम की संस्कृति में नारी एक स्त्री है। और स्त्री के शरीर की प्राकृतिक आवश्यकताओं को महत्वपूर्ण माना गया है। उसके शरीर की आवश्यकताओं को पुरुषों की ओर से भी तबज्जो दी जाती है। परन्तु भारत की संस्कृति में स्त्री के प्रति भिन्न धारणा है। उसे माँ के रूप में ही देखा जाता है। छोटी-छोटी बच्चियों की पूजा भी इसलिए होती है कि वह आगे चलकर माँ बनने वाली है। छोटी सी बच्ची भी अपने पिता और बड़े भाइयों के प्रति स्नेह और प्रेम दिखाती है। क्योंकि उसके अंदर मातृत्व के भाव हैं। पति से यौन संबंध में भी उसके अंदर संतान प्राप्ति के भाव रहते हैं। संतानोत्पत्ति के उपरांत पति के प्रति कम, संतान के प्रति अधिक आसक्त होती है।

एडिपस कॉम्पलेक्स पश्चिम की मानसिकता की देन है। उन्होंने यह साबित कर दिया कि माँ और बेटे में विशेष आकर्षण विपरीत लिंग के कारण ही होता है। यद्यपि हमारे शास्त्रों में भी कई कहानियाँ हैं जिनमें माँ को न पहचानते हुए दोनों के बीच शारीरिक आकर्षण बढ़ते हैं। परन्तु ज्योंहि माँ की पहचान होती है, बेटा अपने उस भाव के कारण भी अपने को दंडित करता है।

इन दिनों एक नई व्यवस्था चली है। समाज में पुरानी मान्यताओं और धारणाओं को बिगाड़ने के बाद चार कदम आगे बढ़कर नई व्यवस्था चलाना। माँ-बेटे, माँ-बेटी, सास-बहू के बीच मित्रवत व्यवहार का चलन प्रारंभ हुआ है। भारत में भी महिलाएँ कहती सुनी जाती हैं- ''ये मेरी बेटी और बहू नहीं है, मेरी मित्र है।'' यह उपयुक्त और सराहनीय नहीं है। माँ-बेटी और सास-बहू के बीच भी स्नेह के संबंध होते हैं। पर वे मित्र नहीं हो सकतीं। माँ-बेटी ही रहेगी। थोड़ा-थोड़ा प्यार थोड़ी-थोड़ी फटकार। थोड़ा-थोड़ा कर्तव्य थोड़ा अधिकार।

जब किसी भी समाज में हिन्हीं संबंधों के बीच मित्रता कायम करने की बात जोरों से उठाई जाती है, इसका तात्पर्य समझना चाहिए कि दाल में अवश्य कुछ काला है। इन बिन्दुओं पर अब हमें भी विचार करने की आवश्यकता है क्योंकि हमारे शहरी समाज में भी आधुनिक माताएँ अपने बच्चों के समान जवान बने रहकर उनकी मित्र बनने की होड़ में आ गई हैं।

माताएँ अपने व्यक्तित्व निर्माण और अपनी भिन्न पहचान बनाने में अपनी प्राकृतिक पहचान और आवश्यकताओं को भी भूल गईं। उनमें अपना जीवन जीने की ललक प्रारंभ हुई। क्लब, किट्टी पार्टी और होटलों में जाकर शाम और रात बिताने के बाद उन्हें अपना असली सुख पीछे छूटता नजर आया। संभवत: इसलिए यह इलाज ढूंढा जा रहा है कि माँ भी बच्चों की मित्र बन जाए। क्लब, किट्टी पार्टी और घरों में भी बच्चों की उम्र के अनुकूल ही वेशभूषा और चाल-ढाल ही नहीं, यहां तक कि सोच भी रखे। शायद इस तरह वे अपने और बच्चों के बीच नजदीकियां बढ़ा सकती हैं। यह संबंध असंभव तो नहीं पर उपयोगी नहीं होगा। क्योंकि बच्चे अपनी माँ खो देंगे, जिसकी महती आवश्यकता है। वह तो 'वज्रादपि कठोराणि-मृदुनि कुसुमादपि' होती है।

हम प्राकृतिक संबंधों में विद्रुपताएं लाने की कोशिश में मात्र संबंध नहीं, समाज में बहुत कुछ बिगाड़ने की कोशिश करते हैं। यह उचित नहीं। बदली हुई पारिवारिक और सामाजिक परिस्थितियों में माँ की भूमिका पर विचार अवश्य करना चाहिए। घर और बाहरी मातृत्व को कैसे संवारें? विचारणीय विषय है। परन्तु जल्दबाजी में एक भूल को सुधारने में दूसरी भूल नहीं करनी चाहिए। माँ को मित्र नहीं बनाया जा सकता। मातृत्व के संवर्द्धन में माँ एक रूप होती है। संतान से मित्रवत व्यवहार करना। हमारे शास्त्रों ने माँ-पिता के विविध रूपों को रेखांकित करते हुए कहा है-

लाडयति पंचवर्षाणि, दस वर्षाणि ताड़यत।
प्राप्तेतू षोडषे वर्षे, पुत्र-मित्र समाचरेत।

आयु के अनुसार लाड़-प्यार-प्रताड़ना और मित्रवत व्यवहार आवश्यक है। परन्तु माँ तो माँ है, मित्र नहीं। ❐

शांति की खोज

■ प्रतिनिधि

एक राजा था जिसे चित्रकला से बहुत प्रेम था। एक बार उसने घोषणा की कि जो कोई भी चित्रकार उसे एक ऐसा चित्र बना कर देगा जो शांति को दर्शाता हो तो वह उसे मुँह माँगा पुरस्कार देगा।

निर्णय वाले दिन एक से बढ़ कर एक चित्रकार पुरस्कार जीतने की लालसा से अपने-अपने चित्र लेकर राजा के महल पहुँचे। 'राजा ने एक-एक करके सभी चित्रों को देखा और उनमें से दो चित्रों को अलग रखवा दिया।' अब इन्ही दोनों में से एक को पुरस्कार के लिए चुना जाना था।

पहला चित्र एक अति सुंदर शांत झील का था। 'उस झील का पानी इतना स्वच्छ था कि उसके अंदर की सतह तक दिखाई दे रही थी। और उसके आस-पास विद्यमान हिमखंडों की छवि उस पर ऐसे उभर रही थी मानो कोई दर्पण रखा हो।' ऊपर की ओर नीला आसमान था जिसमें रुई के गोलों के सामान सफ़ेद बादल तैर रहे थे। जो कोई भी इस चित्र को देखता उसको यही लगता कि शांति को दर्शाने के लिए इससे अच्छा कोई चित्र हो ही नहीं सकता। वास्तव में यही शांति का एक मात्र प्रतीक है।

मित्रों, हर कोई अपने जीवन में शांति चाहता है। परंतु प्रायः हम 'शांति' को कोई बाहरी वस्तु समझ लेते हैं, और उसे दूरस्थ स्थलों में ढूँढते हैं, जबकि शांति पूरी तरह से हमारे मन की भीतरी चेतना है, और सत्य यही है कि सभी दु:ख-दर्दों, कष्टों और कठिनाइयों के बीच भी शांत रहना ही वास्तव में शांति है....!!

दूसरे चित्र में भी पहाड़ थे, परंतु वे बिलकुल सूखे, बेजान, वीरान थे और इन पहाड़ों के ऊपर घने गरजते बादल थे जिनमें बिजलियाँ चमक रहीं थीं- घनघोर वर्षा होने से नदी उफान पर थी- तेज हवाओं से पेड़ हिल रहे थे- और पहाड़ी के एक ओर स्थित झरने ने रौद्र रूप धारण कर रखा था। जो कोई भी इस चित्र को देखता यही सोचता कि भला इसका 'शांति' से क्या लेना देना- इसमें तो बस अशांति ही अशांति है।

सभी आश्वस्त थे कि पहले चित्र बनाने वाले चित्रकार को ही पुरस्कार मिलेगा। तभी राजा अपने सिंहासन से उठे और घोषणा की कि दूसरा चित्र बनाने वाले चित्रकार को वह मुँह माँगा पुरस्कार देंगे। हर कोई आश्चर्य में था!

पहले चित्रकार से रहा नहीं गया, वह बोला, "लेकिन महाराज उस चित्र में ऐसा क्या है जो आपने उसे पुरस्कार देने का फैसला लिया- जबकि हर कोई यही कह रहा है कि मेरा चित्र ही शांति को दर्शाने के लिए सर्वश्रेष्ठ है?

आओ मेरे साथ! राजा ने पहले चित्रकार को अपने साथ चलने के लिए कहा।दूसरे चित्र के समक्ष पहुँच कर राजा बोले, "झरने के बायीं ओर हवा से एक ओर झुके इस वृक्ष को देखो। उसकी डाली पर बने उस घोंसले को देखो- देखो कैसे एक चिड़िया इतनी कोमलता से, इतने शांत भाव व प्रेमपूर्वक अपने बच्चों को भोजन करा रही है।

फिर राजा ने वहाँ उपस्थित सभी लोगों को समझाया, "शांत होने का अर्थ यह नहीं है कि आप ऐसी स्थिति में हों जहाँ कोई शोर नहीं हो-कोई समस्या नहीं हो- जहाँ कड़ी मेहनत नहीं हो- जहाँ आपकी परीक्षा नहीं हो- शांत होने का सही अर्थ है कि आप हर तरह की अव्यवस्था, अशांति, अराजकता के बीच हों और फिर भी आप शांत रहें, अपने काम पर केंद्रित रहें- अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहें।"

'अब सभी समझ चुके थे कि दूसरे चित्र को राजा ने क्यों चुना है।' 'मित्रों, हर कोई अपने जीवन में शांति चाहता है। परंतु प्रायः हम 'शांति' को कोई बाहरी वस्तु समझ लेते हैं, और उसे दूरस्थ स्थलों में ढूँढते हैं, जबकि शांति पूरी तरह से हमारे मन की भीतरी चेतना है, और सत्य यही है कि सभी दु:ख-दर्दों, कष्टों और कठिनाइयों के बीच भी शांत रहना ही वास्तव में शांति है....!!' ❐

कहानी

मेहनत की मूर्ति रेखा रानी

■ आचार्य मायाराम "पतंग"

रेखा रानी ना किसी राजा की रानी है और ना ही किसी राज्य की राजकुमारी। रेखा एक साधारण परिवार की बेटी और बहुत ही साधारण परिवार की बहू है।

मुझे अपने मित्र प्रहलाद जी के साथ एक विवाह में मथुरा जाना पड़ा। वहाँ एक पुराने मित्र से भेंट हो गई। पहले वो दिल्ली में ही रहते थे। वो केन्द्रीय सविता समाज के कार्यकर्ता थे। समाज में हम दोनों अच्छे सहयोगी थे। मथुरा में ही उन्होंने अपनी पुत्री रेखा से मिलवाया। वह दसवीं कक्षा पास कर चुकी थी। मित्र ने उसके लिए वर खोजने का आग्रह किया। प्रहलाद जी के साथ उनका पुत्र विजय कुमार भी हमारे साथ आया था। मैंने परिचय करवाया तथा रेखा और विजय को एक दूसरे के पिता को दिखा दिया। बात बन गई। बात आगे बढ़ी और दो वर्ष में विवाह हो गया।

विजय ने पढ़ाई छोड़कर दुकान खोली। नई बस्ती तिगरी में पहले साइकिल मरम्मत की दुकान थी जिसे विजय ने अपने हिसाब से परिवर्तित कर दिया। रेडियो, टी.वी. बेचने का काम शुरु कर दिया। बस्ती पच्चीस गज के प्लॉटों वाली थी। जो भी आता नकद की बात ना करता। विजय के साथ उसके पिताश्री प्रहलाद जी भी दुकान पर बैठने लगे। विवशता थी बिक्री किश्तों पर करनी शुरु कर दी। व्यापार के नए-नए पैंतरे चल रहे थे। विजय ने भी एक धनोपार्जन कमेटी प्रारंभ कर दी। मेरे जैसे अनेक मित्र हितैषी और परिचित उसके सदस्य बन गए। एक निकट के रिश्तेदार ने पहली ही बार कमेटी से लाखों रुपये की राशि ले ली। कमेटी तो बरसों चली परन्तु विजय को लाभ नहीं हुआ। निकट संबंधी ने कभी कोई किश्त नहीं लौटाई। विजय ने अन्य सदस्यों से यह बात नहीं बताई। मुझे तक पता नहीं चला। आवश्यकता नहीं थी अत: कभी कमेटी से राशि नहीं उठाई। प्रतिमाह राशि देता रहा जो कभी वापस नहीं आई। कुछ अन्य सदस्यों को लगा कि सारी रकम विजय ने हड़प ली। अत: आपस में झगड़े भी हुए।

एकदिन खानपुर सड़क पर विजय के दुर्घटनाग्रस्त होने की दर्दनाक ख़बर मिली। सारी प्रक्रिया अपनाई गई परन्तु दुर्घटना के कारण तथा अपराधी का पता ना लगा। अधिकतर लोगों का अनुमान था कि बस्ती के ही निवासी कुछ मित्र के लेन-देन की गड़बड़ी के कारण शत्रु बन गए थे। यह कुकृत्य उन्हीं लोगों ने किया था। प्रहलाद जी ने भी उस धन्धे से जान छुड़ा ली।

रेखा रानी विधवा हो गई। उसके सामने आपने चार बच्चों को पालने की समस्या खड़ी हो गई। समस्या बड़ी थी परन्तु रेखा की हिम्मत बड़ी थी। उसने अपने मकान के नीचे वाले कमरे का एक भाग दुकान में परिवर्तित कर दिया। पुस्तकों की अलमारी को महिला श्रृंगार की वस्तुओं से सजा दिया। दोपहर से रात तक वहीं बैठी रहती। राह चलती महिलाएँ धीरे-धीरे ग्राहक बनने लगीं। बेचने वाले वहीं सामान दे जाते खरीदने वाले ले जाते। रेखा दुकान भी चलाती और घर भी देखती।

मैंने उसे प्रौढ़ शिक्षा की अनुदेशिका (शिक्षिका) बना दिया। कुछ महिलाओं को बुलाकर दुकान के पिछले भाग में उन्हें साक्षरता का ज्ञान रेखा देती। इसका कुछ पारिश्रमिक भी मिलता। सास-ससुर घर के कार्यों में यथाशक्ति सहयोग करते। बच्चों के पालन-पोषण तथा पढ़ाई में उनकी आवश्यक सहायता करते।

इतनी व्यस्तता के साथ भी रेखा रानी अपनी पढ़ाई भी करती रहती। विवाह से पूर्व हाई स्कूल ही किया हुआ था। कोटला मुबारकपुर आने के बच्चे भी पाले और सास-ससुर की सेवा भी करते हुए आगे पढ़ने की इच्छा भूली नहीं। यू.पी. बोर्ड से ही प्राइवेट इंटर किया। पत्राचार से बी.ए. की पढ़ाई की। मैं जब भी उनके घर जाता, वह अध्याय में कुछ विषय चिन्हित कर के रखती। मैं रेखा की शंकाओं का यथा संभव समाधान करता। बी.ए. भी कर लिया तो प्रहलाद जी ने हरयाणा से उसे

बी.एड. करने के लिए प्रोत्साहित किया। कहते है 'जहाँ चाह वहाँ राह' जब रेखा रानी ने लगन से परिश्रम से पढ़ाई करी तो बी.ऐड. भी हो गई। अब तो जब भी शिक्षिका के लिए पद (स्थान) विज्ञापित होते, वह प्रार्थना पत्र भरती। दिल्ली, हरियाणा, यू.पी. राजस्थान जहाँ भी पता लगता वह आवेदन करती।

प्रहलाद जी का स्वास्थ्य भी गिरता चला गया। उन्होंने अपने जीवन में भारी परिश्रम किया था। श्यामाप्रसाद विद्यालय में नौकरी के साथ खाली समय में कैन्टीन भी चलाते थे। घर से ही भुनी छिली मूंगफली के पैकेट बनाकर भी सपलाई करते थे। एक दिन वो जर्जर शरीर को त्याग कर राम के प्यारे हो गए। मैं भी वहाँ से शाहदरा चला गया। अकेली रेखा रानी घर सँभालती, बच्चों की पढ़ाई सँभालती, सास की बीमारी में सेवा करती और दुकान भी चलाती। उसका पतला-दुबला तन था परन्तु मज़बूत मन था। अत: कभी हार नहीं मानी।

ईश्वर उसकी सहायता अवश्य करता है जो निष्ठापूर्वक अपने मार्ग पर बढ़ता रहता है। एकदिन श्रीकृष्ण जी की कृपा हो गई और राजस्थान सरकार की शिक्षिका की नौकरी उसे प्राप्त हो ही गई। नौकरी अजमेर में लगी। रेखा अजमेर चली गई। धन का नियिमित आगमन तो हो गया, परन्तु परिवार की जिम्मेदारी वृद्धा सास पर आ गई। प्रत्येक परेशानी का हल तो निकालना ही पड़ता है। कुछ वर्ष अजमेर में बिताए फिर स्थानान्तरण धौलपुर हो गया। धौलपुर में ननद, संध्या की ससुराल है। सम्पन्न घर है अच्छा वातावरण है। रेखा का बड़ा पुत्र तो पहले ही संध्या के पास रहता था। फिर अन्य बच्चे और सास भी धौलपुर ही आ गए। रेखा रानी ने अपने बल पर पुत्रियों को विवाह करके विदा कर दिया। पढ़ा-लिखा कर दोनों बेटों को डॉक्टर बना दिया। असंभव सा लगने वाला कार्य अपने धैर्य, साहस और परिश्रम से संभव कर दिया। परमात्मा उसके पुत्र-पुत्रियों में भी ऐसा ही साहस और शौर्य प्रदान करे तथा उनके जीवन को सुखमय बनाए। रेखा से और भी लड़कियाँ सीखेंगी, ऐसी आशा है। ❐

सर्वमान्य नेता अटल जी

■ **आचार्य मायाराम पतंग**

शिक्षा करी पूरी,
करी नौकरीकिसी की नाय
संघ के प्रचार की,
संभाली जिम्मेदारी जी।
छोड़ा निज परिवार,
किया नहीं घरबार,
बन देश सेवादार,
जिंदगी गुजारी थी।।
जागेंगे सारा समाज,
लाएं हम ऐसा राज,
त्यागें और सब काज,
मति ये विचारी जी।
कहते कवि पतंग,
जाने राजनीति रंग,

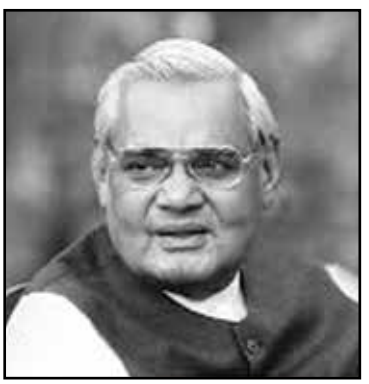

सर्वमान्य हुए नेता
अटल बिहारी जी।।

बनाया विरोधी दल,
ख्याति पाई हर पल,
सत्ता सेभी पाई खूब,
मान व बढ़ाई जी।
सर्वोपरि राष्ट्र प्रेम,
देश की कुशल क्षेम,
त्याग स्वार्थभाव पूरी
जिंदगी बितानी जी।
रहे जो ईमानदार,
किया नहीं भ्रष्टाचार,
जनताके मानस में
प्रीति उपजाई जी।
कहत कवि पतंग,
विरोधी भीलिये संग,
नेता आदर्श रहे,
श्री वाजपाई जी।। ❐

मानवता के पुजारी थे मालवीय जी

■ डॉ. सत्या भार्गव

भारत माता को गुलामी की जंजीर से मुक्त कराने में जिन वीर सपूतों का योगदान रहा, उनमे पंडित मदन मोहन मालवीय का नाम उल्लेखनीय है। इनका जन्म 25 दिसम्बर 1861 को प्रयाग में हुआ था। इनके पिता पंडित ब्रजनाथ संस्कृत के आचार्य थे और माता श्रीमती मोना देवी धार्मिक विचारों वाली महिला थीं।

मदन मोहन बचपन से ही अत्यंत कुशाग्र बुद्धि थे। बचपन में उनके पिताजी ने उन्हें घर पर ही शिक्षा देनी शुरू की। उसके बाद उनका दाखिला प्रयाग की एक पाठशाला में करा दिया गया। अपनी कुशाग्र बुद्धि और विलक्षण प्रतिभा के बल पर जल्द ही उन्होंने पाठशाला में अपनी पहचान एक मेधावी छात्र के रूप में बना ली। पाठशाला में उन्हें हिन्दू धर्म और भारतीय संस्कृति के बारे में शिक्षा दी गयी। मदन मोहन मन लगाकर पढ़ते थे। पढ़ते समय वे इतने मग्न हो जाते थे कि उन्हें खाने-पीने की भी सुध नहीं रहती थी। घर में एकांत स्थान न होने के कारण वे प्रायः अपने सहपाठी के घर जाकर पढ़ते थे।

उस समय भारत पर अंग्रेजों का शासन था और देश की स्थिति बहुत गंभीर और दयनीय हो चुकी थी। अंग्रेजी विद्यालयों में हिन्दू धर्म और भारतीय संस्कृति के विरोध में बहुत दुष्प्रचार होता था। मदन मोहन जब भारत की दुर्दशा और अंग्रेजों के अत्याचार के बारे में सोचते थे तो उनका मन अंग्रेजों के प्रति घृणा से भर जाता था। उनके संस्कारों ने उन्हें देशभक्ति का पाठ पढ़ाया। हिन्दू धर्म और भारतीय संस्कृति के प्रति मदन मोहन का गहरा लगाव था। इसका विरोध वे चुपचाप सहन न कर सके। उन्होंने अपने कुछ साथियों की मदद से 'वाग्वर्धिनी सभा' की स्थापना की। इस सभा के माध्यम से उन्होंने जगह -जगह भाषण देकर अंग्रेजों द्वारा हिन्दू धर्म और भारतीय संस्कृति के विरुद्ध किये जाने वाले प्रचार का विरोध किया।

पढ़ाई के प्रति मदन मोहन की रुचि बढ़ती जा रही थी। अपनी मेहनत के बल पर वे लगातार सफल होते गए। कलकत्ता विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद म्योर सेंट्रल कॉलेज में दाखिला लेना चाहते थे लेकिन घर की स्थिति अच्छी न होने के कारण उन्होंने उच्च शिक्षा का विचार त्याग दिया। उनके पिता इस इच्छा को भांप गए। वे नहीं चाहते थे कि उनके पुत्र को पढ़ाई में किसी प्रकार का समझौता करना पड़े। उन्होंने मदन मोहन का दाखिला म्योर सेंट्रल कॉलेज में ही करा दिया। मदन मोहन की पढ़ाई के दौरान उन्होंने किसी वस्तु का अभाव नहीं होने दिया। म्योर सेंट्रल कॉलेज में संस्कृत के प्राध्यापक पंडित आदित्यराम भट्टाचार्य ने उन्हें संस्कृत के

अध्ययन के लिए प्रोत्साहित किया। मदन मोहन मालवीय अंग्रेजी सभ्यता के विरोधी थे। उन्होंने उन युवकों को, जो अंग्रेजी सभ्यता के पीछे भाग रहे थे, बहुत समझाया। इस दिशा में उन्होंने एक प्रहसन लिखा था – 'जेंटलमैन' इस प्रहसन में उन्होंने अंग्रेजी सभ्यता की खिल्ली उड़ाई थी।

पढ़ाई करने के उपरांत उन्हें एक विद्यालय में अध्यापक की नौकरी मिल गयी। मालवीयजी के सभी छात्र उनका बहुत सम्मान करते थे। उनकी शिक्षण – शैली इतनी सुरुचिपूर्ण थी कि छात्रों को उनका पढ़ाया हुआ पाठ पूरी तरह समझ आ जाता था। अध्यापन काल में भी मालवीयजी ने सामाजिक और राजनीतिक कार्यो में रुचि बनाए रखी। अब उनकी सामाजिक रुचियों का दायरा प्रयाग से निकलकर देश के विभिन्न नगरों तक फैलने लगा। वे अपने सेवा- क्षेत्र में पूरे भारत वर्ष को शामिल करना चाहते थे। सन् 1886 में कांग्रेस का दूसरा अधिवेशन कलकत्ता में होने जा रहा था, तो मालवीय जी अपने गुरु पं. आदित्यराम भट्टाचार्य के साथ उसमें शामिल होने के लिए गए। यह अधिवेशन मालवीय जी के वास्तविक राजनीतिक जीवन का शुभारम्भ था। अधिवेशन में उनके ओजस्वी भाषण को सुनकर वहां उपस्थित सभी लोग मालवीय जी से बहुत प्रभावित हुए। मालवीय जी के भाषण और उनके विचारों से कालाकांकर राजा रामपाल सिंह इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मालवीय जी को 'हिंदुस्तान' पत्र का संपादक बना दिया। उस समय मालवीय जी ने उनसे कहा, 'राजा साहब, मैं ब्राह्मण हूं। मेरे कुछ नियम हैं, परम्पराएं हैं। आपका प्रस्ताव मैं इस शर्त पर स्वीकार कर सकता हूं कि जब आप मदिरा का सेवन किये हों तो मैं आपके पास नहीं आऊंगा।' राजा साहब ने शर्त मान ली।

सन् 1887 में मालवीय जी ने अध्यापक पद से त्यागपत्र दे दिया। उसके बाद वे कालाकांकर जाकर 'हिंदुस्तान' पत्र का संपादन करने लगे। यहाँ उनके व्यक्तित्व का एक विराट पक्ष उभरकर सामने आया। मालवीय जी के संपादन में 'हिंदुस्तान' ने बड़ी ख्याति अर्जित की। उनके प्रभावित लेखों को जन मानस बड़ी रुचि से पढ़ता था। पत्र में जनता और सरकार, दोनों की कमियों और उपलब्धियों पर निष्पक्ष एवं निर्भीकतापूर्वक लेख छपते थे। मालवीय जी ने ढाई वर्ष तक 'हिंदुस्तान' का संपादन किया। इस अवधि में उन्होंने पत्र को एक सामाजिक दर्जा दिलवाने में सफलता प्राप्त की। सन् 1889 में वे कालाकांकर छोड़कर प्रयाग आ गये। वहां उन्होंने अंग्रेजी पत्र 'इंडियन ओपेनियन' के संपादन का कार्य किया। संपादन के साथ-साथ मालवीय जी देश की सामाजिक समस्याओं को दूर करने के बारे में भी सोचते थे। भारतीयों में हिन्दू धर्म संस्कृति के प्रति जागरूकता लाने के लिए वे एक हिन्दू विश्वविद्यालय स्थापित करना चाहते थे। अपने इस विचार को जनमानस तक पहुंचाने के उद्देश्य से उन्होंने पत्र 'अभ्युदय' का प्रकाशन आरम्भ कर दिया। इस पत्र के माध्यम से वे जनमानस को शिक्षा एवं विद्यालयों की आवश्यकता से अवगत कराते रहते थे और साथ ही तत्कालीन प्रमुख समस्याओं पर लेख भी लिखते थे।

शिक्षा और सुधार कार्यों के नाम पर अंग्रेज अधिकारी हिन्दू धर्म के मूल सिद्धांतों पर प्रहार करते थे। अपने धर्म को श्रेष्ठ बताने के लिए वे ज्यादा से ज्यादा हिन्दुओं को धर्म परिवर्तन का प्रलोभन देते थे। यह सब देखकर मालवीय जी को बड़ा दु:ख होता था। वे किसी भी धर्म को छोटा या बड़ा नहीं मानते थे। उनकी दृष्टि में सभी धर्मों में मानवता का सन्देश निहित है।

शिक्षा और सुधार कार्यों के नाम पर अंग्रेज अधिकारी हिन्दू धर्म के मूल सिद्धांतों पर प्रहार करते थे। अपने धर्म को श्रेष्ठ बताने के लिए वे ज्यादा से ज्यादा हिन्दुओं को धर्म परिवर्तन का प्रलोभन देते थे।

यह सब देखकर मालवीय जी को बड़ा दु:ख होता था। वे किसी भी धर्म को छोटा या बड़ा नहीं मानते थे। उनकी दृष्टि में सभी धर्मों में मानवता का सन्देश निहित है। परन्तु किसी एक धर्म की श्रेष्ठता बताने के लिए दूसरे धर्म का अपमान करना उन्हें सहन नहीं था। मालवीय जी एक शिक्षित और धार्मिक परिवार में पैदा हुए थे, इसलिए बचपन से ही उनके हृदय में हिन्दू संस्कार कूट-कूटकर भरे हुए थे। मालवीय जी ने निश्चय किया कि वे हिंदुत्व की रक्षा के लिए संघर्ष करेंगे। सन् 1906 में मालवीय जी ने कुम्भ के पावन पर्व पर 'सनातन धर्म महासभा' का शुभारम्भ किया। इसी समय 'काशी विश्वविद्यालय' की स्थापना का प्रस्ताव भी पारित हुआ।

मालवीय जी के कुछ मित्रों ने उन्हें वकालत पढ़ने और वकालत के माध्यम से देश सेवा करने के लिए प्रेरित किया। मित्रों के आग्रह पर मालवीय जी वकालत की पढ़ाई करने लगे। उस समय वे 'इंडियन ओपिनियन' में सह संपादक थे। मालवीय जी वकालत की परीक्षा की तैयारी करने लगे। वकालत की परीक्षा में वे उत्तीर्ण हुए। मालवीय जी प्रयाग उच्च न्यायालय में वकालत करने लगे। कुछ दिनों में ही उन्होंने कई मुकदमे जीतकर सभी को हतप्रभ कर दिया। वकालत में मालवीय जी ने खूब ख्याति अर्जित की। धीरे-धीरे उनका नाम देश के उच्चकोटि के वकीलों में लिया जाने लगा। मालवीय जी कभी झूठा मुकदमा नहीं लेते थे। वे अत्यंत कुशाग्र होने के साथ-साथ परम विवेकी भी थे। वे अपने तर्कों को इतने प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते कि विरोधी पक्ष के वकील को उसके खंडन की कोई युक्ति नहीं मिलती थी। वकालत से मालवीय जी को जो उपलब्धि हासिल हुई, उससे न तो उनके मन में कभी अहंकार का भाव आया और न ही उन्होंने उसे अपनी अंतिम उपलब्धि माना। उनके हृदय में तो तीव्र आकांक्षाएं थीं। उनका सबसे बड़ा स्वप्न काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना करना था। उनके पिता ने उनसे कहा था कि यदि तुम्हें अपना यह स्वप्न पूर्ण करना है तो वकालत छोड़नी पड़ेगी। मालवीय जी ने कुछ समय बाद ही वकालत छोड़ दी।

मालवीय जी ने शिक्षा के बाद जिस विषय पर सबसे ज्यादा प्रभावशाली भाषण दिया, वह 'शर्तबंद कुली प्रथा' थी। मालवीय जी ने इस प्रणाली का विरोध वायसराय लोर्ड हार्डिंग के समय में किया। उन्होंने लोर्ड हार्डिंग के समक्ष इस प्रणाली को तत्काल समाप्त करने की अपील की।

सन् 1907 में काशी नरेश की अध्यक्षता में आयोजित एक सभा में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव रखा गया। सभा में उपस्थित कई सदस्यों ने इसकी सफलता पर संदेह व्यक्त किया लेकिन अंत में यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया। प्रस्ताव की स्वीकृति से मालवीय जी का उत्साह बढ़ गया। वे इस योजना को कार्यान्वित करने के प्रयासों में जुट गए। विश्वविद्यालय का निर्माण कार्य शुरू करने में काफी धन की आवश्यकता थी। कोई अकेला व्यक्ति इतना धन नहीं दे सकता था। मालवीय जी ने निश्चय किया कि वे पूरे देश में घूम-घूमकर विश्वविद्यालय के लिए धन राशि एकत्र करेंगे। मालवीय जी ने पूरे देश का दौरा करना शुरू कर दिया। वे विश्वविद्यालय के मानचित्र को साथ ले कर चलते थे और घर-घर जाकर अपनी राष्ट्रीय शिक्षा योजना के बारे में बताते थे। वे जहां-जहां भी गए उन्हें विश्वविद्यालय के लिए दान में कुछ न कुछ अवश्य मिला। 4 फरवरी, 1916 को वसंत पंचमी (सरस्वती पूजा) के दिन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का शिलान्यास किया गया। उसके उद्घाटन समारोह में गांधीजी सहित देश-विदेश के कई गण्यमान्य व्यक्ति शामिल हुए।

सन् 1919 में अंग्रेजी सरकार ने रोलट एक्ट पारित किया। इस एक्ट में समस्त भारतीयों की मानवीय

अस्मिता का मखौल उड़ाया गया था। मालवीय जी ने इसका विरोध करते हुए विधान परिषद् में उत्तेजित भाषण दिए। गांधीजी ने भी इस एक्ट का विरोध करते हुए घोषणा की, 'यदि इस एक्ट को स्वीकार किया गया तो मैं सत्याग्रह आन्दोलन शुरू कर दूंगा, परिणाम चाहे कुछ भी हो।' रोलट एक्ट के विरोध के लिए पंजाब के जलियाँवाला बाग में एक सभा का आयोजन किया गया था। वहां एकत्रित हजारों लोगों पर जनरल डायर ने गोली चलाने का आदेश दे दिया। आदेश पाते ही अंग्रेज सैनिकों ने गोली चला दी। इसमें सैकड़ों निर्दोष भारतीय मारे गए और अनेक घायल हुए। अंग्रेजों के इस कुकृत्य से पूरा देश स्तब्ध रह गया। देश भर में इन्कलाब की लहर दौड़ गयी। मालवीय जी ने विधान सभा में उपस्थित होकर जोरदर शब्दों में इसका विरोध किया। अपने तर्कों से उन्होंने इस हत्याकांड को अनधिकृत और अमानवीय सिद्ध किया। इस सम्बन्ध में मालवीय जी ने सरकार को भी आरोपी सिद्ध किया।

मालवीय जी के हृदय में दीन-दुखियों के लिए अपार सहानुभूति थी। एक बार मालवीयजी प्रयाग में शाम के समय घूम रहे थे। रास्ते में चलते हुए उन्हें एक भिखारिन दिखाई पड़ी। वह बहुत वृद्ध हो चुकी थी और पीड़ा से कराह रही थी। मालवीय जी ने उसके पास जाकर पूछा, 'आपको क्या कष्ट है माताजी?' मालवीय जी के अपनत्व भरे शब्दों को सुन कर भिखारिन के नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगी। कराहते हुए उसने बताया, 'मेरे शरीर में घाव हो गए हैं। मेरे परिवार वालों ने मुझे त्याग दिया है।' सड़क पर आते-जाते लोगों ने मालवीय जी को भिखारिन के पास खड़े देखा तो वहां भीड़ लग गयी। कई लोग भिखारिन के कटोरे में सिक्के डालने लगे। मालवीय जी ने कहा, 'मित्रो! इन्हें धन की नहीं, चिकित्सा की आवश्यकता है। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि हमारे बुजुर्ग इस तरह त्याग दिए जाते हैं।' मालवीय जी ने उस वृद्धा को तांगे पर बिठाया और इलाज के लिए अस्पताल तक पहुंचाया।

मालवीय जी ने शिक्षा के बाद जिस विषय पर सबसे ज्यादा प्रभावशाली भाषण दिया, वह 'शर्तबंद कुली प्रथा' थी। मालवीय जी ने इस प्रणाली का विरोध वायसराय लोर्ड हार्डिंग के समय में किया। उन्होंने लोर्ड हार्डिंग के समक्ष इस प्रणाली को तत्काल समाप्त करने की अपील की। इस प्रणाली को समाप्त करने के लिए दिए गए भाषण में उन्होंने कहा था- 'इस प्रणाली ने पिछले कई सालों से समाज का शोषण किया है। हमारे कितने ही भाई-बहन इस विनाशकारी प्रणाली के शिकार बने और कितने शारीरिक व मानसिक यातना भुगत रहे हैं। अब समय आ गया है कि इस प्रणाली को समाप्त कर देना चाहिए।' मालवीय जी का प्रयास सफल रहा और लोर्ड हार्डिंग ने इस प्रणाली को समाप्त करने की घोषणा कर दी।

मालवीयजी हर परिस्थिति में निर्भय और आशावादी रहते थे। उनकी आशावादिता उन्हें ही नहीं, बल्कि अन्य लोगों को भी लाभान्वित करती थी। एक बार पं शिवराम जी के भतीजे काशी प्रसाद गंभीर रूप से बीमार हुए। उन्हें तेज बुखार था। पं. शिवराम जी बहुत चिंतित थे। वे मालवीयजी में गहरी आस्था रखते थे। उनका विचार था कि एक बार यदि मालवीय जी रोगी के सिर पर हाथ रख दें तो वह अवश्य ही स्वस्थ हो जाएगा। मालवीय जी के किसी मित्र ने इसके बारे में बताया। मालवीय जी तुरंत शिवराम जी के यहां पहुंच गए। मालवीय जी ने रोगी के पिता से कहा, 'चिंता करने की कोई बात नहीं, यह अभी अच्छा हो जाएगा।' मालवीय जी के शब्दों का चमत्कार था या आस्था का आदर, यह बताना तो मुश्किल है, लेकिन रोगी आधे घंटे बाद ही स्वस्थ होने लगा।

मालवीय जी में मानवता कूट-कूटकर भरी हुई थी। उनके हृदय में देश और देशवासियों के प्रति अपार स्नेह था। उन्होंने शिक्षा, धर्म और राजनीति सभी क्षेत्रों में अग्रणी योगदान दिया। जीवन भर देश की सेवा में लगे रहने वाले, मानवता के पुजारी महामना मदन मोहन मालवीय जी नवम्बर 1946 में परमात्मा में विलीन हो गए। ❐

शास्त्रार्थ की पंडिता गार्गी

■ अंजु पाण्डेय

भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही पंडिता गार्गी सम्मान व श्रद्धा की पात्र रही हैं। आर्य जाति मातृशक्ति में लक्ष्मी, सरस्वती एवं दुर्गा इन तीनों रूपों को निहित मानती है। लक्ष्मी रूप सौंदर्य, सम्पदा एवं आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। सरस्वती रूप विद्या, बुद्धि एवं विवेक का प्रतीक है। दुर्गा रूप शासन एवं शक्ति का प्रतीक है। इस प्रकार नारी शक्ति, ज्ञान एवं ऐश्वर्य इन तीनों का समन्वित रूप है। नारी की भूमिका, अधिकार क्षेत्र एवं उपलब्धियों के प्रमाण वैदिक ग्रंथों में अंकित हैं।

ऋषि याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ करने वाली पंडिता गार्गी का नाम उपनिषदों में मिलता है। गर्ग गोत्र में जन्म लेने के कारण इन्हें गार्गी कहा जाता था। गार्गी अत्यंत शिक्षित एवं विदुषी महिला थीं।

गार्गी राजा जनक की सभा को सुशोभित करने वाली एक ऋषिका एवं विद्वान ब्राह्मण वाचक्नव की पुत्री थीं। इसी कारण उनका पूरा नाम गार्गी वाचक्नवी था। इससे यह साबित होता है कि आज जैसे पुत्रों के नाम बहुधा पिता के नाम पर रखे जाते हैं उस काल में पुत्रियों के नाम भी पिता के नाम से ही जाने जाते थे तथा विद्याध्ययन की भी पूर्ण सुविधा व स्वतंत्रता उन्हें समान रूप से प्राप्त थी।

वृहदारण्यक उपनिषद् में गार्गी से संबंधित एक कथा का वर्णन है। एक बार राजा जनक ने सभा में घोषणा की कि इस सभा में जो सबसे बड़ा ब्रह्मज्ञानी होगा, उसे एक हजार गायें दान में दी जाएंगी और हर गाय के एक-एक सींग में दस-दस स्वर्ण मुद्राएं बंधी होंगी। उनकी सभा में सन्नाटा छा गया। किसी भी विद्वान में यह कहने का साहस नहीं हुआ कि वह सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मज्ञानी है। कुछ देर सभा में चुप्पी छाई रही। फिर ऋषि याज्ञवल्क्य उठ खड़े हुए और उन्होंने अपने शिष्यों से वे सारी गायें ले जाने को कहा। सभी जानते थे कि याज्ञवल्क्य को चुनौती देना कठिन है, उनके जैसा ब्रह्मज्ञानी वहां दूसरा नहीं है।

परन्तु सभा में उपस्थित गार्गी को याज्ञवल्क्य का यह अहंकार भरा व्यवहार पसंद नहीं आया। उन्होंने सोचा बिना शास्त्रार्थ के अपने आपको सर्वश्रेष्ठ मानना अनुचित है। गार्गी ने उठकर याज्ञवल्क्य को चुनौती दी। गार्गी ने एक के बाद कई कठिन प्रश्न याज्ञवल्क्य जी से पूछे। सभा में उपस्थित सभी चकित रह गये, याज्ञवल्क्य भी घबरा गये। मनुष्य के अस्तित्व, सृष्टि की उत्पत्ति आदि विषयों पर गार्गी तब तक पूछती गयीं, जब तक कि ऋषि सोच-सोच कर थक न गए। फिर एक प्रश्न पर तो ऋषि इतना चकराये कि उन्होंने उत्तर देने के बजाय गार्गी को टोक दिया, ''गार्गी इतने सारे प्रश्न मत करो, नहीं तो तुम्हारा सिर थक कर गिर जाएगा। सच्चे दैवीय गुणों के लिए आर्थिक तर्क-वितर्क ठीक नहीं होगा।''

याज्ञवल्क्य ने यहां यह नहीं कहा कि एक महिला के लिए इतना तर्क-वितर्क ठीक नहीं होता। इससे लगता है कि उस युग में महिला विद्वान व पुरुष विद्वान नहीं थे, बल्कि विद्वान सिर्फ विद्वान ही होता था।

फिर भी नारी अस्मिता बरकरार रखते हुए ऋषि के सम्मान में वे मौन हो गयीं। वे हारी नहीं थीं।

अगली सभा में गार्गी ने अपने छूटे प्रश्नों का सूत्र फिर सम्भाला परन्तु ऋषि याज्ञवल्क्य को बचाते हुए, उन्हें सम्मान देते हुए ही। इस प्रकार भरी सभा में उन्होंने शास्त्रार्थ में न हारते हुए भी विनम्रता से कहा कि ''आप स्वयं को भाग्यशाली समझ सकते हैं यदि कुछ समाधान लेकर आएं परन्तु ब्राह्मण की व्याख्या करने में आप में से कोई ऋषि याज्ञवल्क्य को कभी हरा नहीं पायेगा। ये अजेय हैं, महान हैं।

मैं अपनी हार स्वीकार करती हूं।''

ऋषि याज्ञवल्क्य गद्‌गद् हो उठे साथ ही चकित भी हुए। यह थी उस समय की विदुषी स्त्रियों की अस्मिता की नैतिक परम्परा और विनम्रता, न हार कर भी गार्गी ने अन्त में हार मान कर न केवल ऋषि को सम्मान दिया, बल्कि स्वयं को भी सबकी दृष्टि में ऊंचा उठा लिया।

विद्वत्ता विनम्रता से ही ऊंची उठती है। याज्ञवल्क्य के दंभ को निरस्त करने का उनका उद्‌देश्य भी पूरा हो गया था। उन्होंने अंत में कहा, ''मेरे प्रश्नों का समाधान करने वाले ऋषि याज्ञवल्क्य ही इस समय सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मज्ञानी हैं। इन्हें कोई हरा नहीं सकता।''

इस तरह विद्वानों की भरी सभा में एक ब्रह्मज्ञानी महान ऋषि से उच्च कोटि की विद्वत्ता का प्रदर्शन करते हुए शास्त्रार्थ करके गार्गी ने यह सिद्ध कर दिया कि उस समय की सर्वश्रेष्ठ नहीं तो याज्ञवल्क्य के बाद वह ही प्रमुख ब्रह्मज्ञानी थीं। ❑

त्यौहारी हमारी सभ्यता

■ **विनीता अग्निहोत्री**

त्यौहारी हमारी सभ्यता, त्यौहारी रीत,
त्यौहारों से ही बढ़ती है हम सबमें प्रीत।

नूतनता लाते हैं त्यौहार, कारोबार बढ़ाते हैं त्यौहार।
अच्छे लगते हैं त्यौहार, खुशियाँ लाते हैं त्यौहार।।

भारत वर्ष में त्यौहारों की महिमा बड़ी अनंत।
त्यौहारों को मनाते हैं, योगी और संत।।

आओ मिलकर त्यौहार मनाएं, अपने घर में रौनकता लाएं।
प्रेम की ज्योजि जलाये, ईर्ष्या नफरत को दूर भगाएं
संस्कृति अपनी पर बलि बली जाएं।। ❑

मेरे सपनों का भारत (निबंध)

■ **दिव्या**

प्रस्तावना- हमारा भारत बहु-सांस्कृतिक और बहु-धार्मिक है। हमारा देश उद्योग में बहुत तेजी से गति कर रहा है। भारत में अलग-अलग जाति, धर्म, संस्कृति के लोग एक साथ रहते हैं। मेरे सपनों के भारत में सांस्कृतिक और विविधता एकता के लिए जाना जाता है। मेरे सपनों के भारत में किसी से भेदभाव नहीं होगा। हमारा देश तेजी से प्रगति करे। इसके लिए हमें अपने देश को स्वच्छ व सुन्दर बनाना है और अपने भारत को खुशहाली से भरना है। हमें अपने भारत के लिए लंबा रास्ता तय करना होगा। मेरे सपनों का भारत बहुत ही सुन्दर होगा।

शिक्षा और रोजगार- मैं चाहती हूं कि मेरे सपनों के भारत में सभी नागरिक शिक्षित हों। राष्ट्र की वृद्धि के अभाव में शिक्षा में बाधा होती है। सरकार द्वारा हमारे देश में शिक्षा को जागरूकता करने का प्रयास हो रहा है। शिक्षित और प्रतिभाशाली नागरिकों को उनके योग्य रोजगार मिलना चाहिए। नागरिकों का शिक्षित होना रोजगार में रुकावट नहीं हो सकती। 'शिक्षा का अधिकार' हर नागरिक को होना चाहिए।

जाति व धार्मिक मुद्‌दे- मेरे सपनों का भारत ऐसा होगा जहां जाति व धर्म में भेदभाव नहीं होगा। मेरे भारत में जाति व धार्मिक मुद्‌दे पर बड़ा सा बड़ा कदम उठाना चाहिए।

भ्रष्टाचार- मेरे सपनों के भारत में भ्रष्टाचार नहीं होगा । मेरे सपनों के भारत में सिर्फ भलाई और संस्कृति का गुणगान होगा।

लिंग भेदभाव- मैं चाहती हूं मेरे सपनों के भारत में महिलाओं और पुरुषों को बराबर सम्मान मिलना चाहिए। ❑

तमसो मा ज्योतिर्गमय

■ श्यामबाबू शर्मा

त्योहार जीवन की एकरसता को भंग करते हैं और बुझे हुए एवं निराश मन में स्फूर्ति, चेतना एवं आशा का संचार करते हैं। यही कारण है कि हमारा देश भारतवर्ष त्योहारों, पर्वों एवं उत्सवों को मनाता है। अन्य देशों में जहां राष्ट्रीय पर्वों को महत्व प्राप्त है, वहीं भारत में राष्ट्रीय पर्वों यथा स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, गांधी जयंती आदि को जितना महत्व प्राप्त है, वहीं भारत में सांस्कृतिक एवं सामाजिक पर्वों, होली, दीपावली एक सांस्कृतिक राष्ट्र है। यहां के निवासियों की अपनी परम्पराओं एवं संस्कृति से गहरा लगाव है। चाहे हिन्दू हो, मुसलमान हो, ईसाई हो, पारसी हो या सिक्ख, सबको अपनी धार्मिक परम्पराएं या उत्सव मनाने का समान अधिकार है। सभी एक-दूसरे को सहयोग एवं सम्मान देकर शुभकामनायें प्रेषित करते हैं।

हिन्दुओं के सभी पर्वों में से दीपावली एक सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। यह वर्षा ऋतु के उपरान्त कार्तिक अमावस्या के दिन समस्त भारत में नहीं अपितु विदेशों में भी हिन्दू बाहुल्य क्षेत्रों में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। यह ज्ञान एवं प्रकाश का पर्व है। यह हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का संदेश देता है। अर्थात् हमारे हृदय से अज्ञानता को दूर कर ज्ञान रूपी प्रकाश उत्पन्न करता है। यह असत् पर सत् का भी प्रतीक है।

भारत में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएं आदिकाल से चली आ रही हैं। मेले हों, उत्सव हों या पर्व, किसी न किसी ऐतिहासिक, धार्मिक अथवा राजनीतिक महापुरुषों के जन्मदिवस, निर्वाण दिवस अथवा महान ऐतिहासिक घटनाओं से सम्बंध रखते हैं। दीपावली के पर्व से भी महान ऐतिहासिक एवं धार्मिक घटनायें जुड़ी हुई हैं। कहा जाता है कि जब भगवान श्रीराम लंकापति रावण पर विजय प्राप्त करके अयोध्या वापस आये, तब उस दिन कार्तिक मास की अमावस्या थी। अयोध्यावासियों ने राम के स्वागत में अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने हेतु घर-घर दीप जलाये थे। तभी तो दीपावली की यह परम्परा प्रारम्भ हुई। भगवान कृष्ण ने नरकासुर राक्षस का वध चौदस के दिन किया था। अतः इस पर्व को छोटी दीवाली अथवा नरक चौदस कहते हैं। अमावस्या के दिन ही भगवान महावीर स्वामी ने निर्वाण प्राप्त किया था। विष्णु-पत्नी चंचला लक्ष्मी के आह्वान पर अपने यहां स्थापित्व हेतु लक्ष्मी पूजन व विघ्न विनाशक - शुभ एवं लाभ के जनक गणेश वन्दन हेतु यह पर्व मनाया गया।

यह पर्व हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का संदेश देता है। इस दिन प्रकाश के पुंज एक साथ अंधकार के विरुद्ध खड़े हो जाते हैं। इन प्रकाश पुंजों से अमावस्या का घना अंधकार भी पराजित हो

जाता है। इस पर्व से चार पर्व भी जुड़े हैं - धनतेरस, नरक चतुर्दशी, गोवर्धन पूजा तथा भैया दूज। इनके कारण दीपावली का पर्व एक महापर्व के रूप में हमें उद्वेलित करता है। इस पर्व पर गरीब, अमीर, किसान, मजदूर से लेकर धनाढ्य सभी उत्साहित होते हैं। इसका प्रकृति के साथ भी सामंजस्य है क्योंकि घरों और भवनों की गन्दगी दूर कर सफाई एवं स्वच्छता का वातावरण झलकने लगता है। आलोक पर्व दीप-मालिका असत् पर सत् और तमस् पर ज्योति की विजय का सनातन उद्घोष है। यह पर्व निराशा के सघन अंधकार में आशा की किरण जगाता है, कृषक के उदास अधरों पर हर्ष की लाली बिखेर देता है और मन के सूने आंगन में हर्षोल्लास की किरणें जगाता है। यह राष्ट्र को धन-धान्य से पूर्ण और सब प्रकार से सम्पन्न बनाने का विराट आयोजन है। यह पर्व मात्र अट्टालिकाओं की प्राचीरों को विद्युत बल्वों से आलोकित नहीं करता, अपितु निर्धन की कुटिया में आशा का दीप बनकर अपनी मधुर ज्योति बिखेरता है। यह कृषक समाज को नये धान्य के अभिनन्दन की बेला प्रदान करता है, वणिक वर्ग में वर्ष-पर्यन्त धन-धान्य से सम्पन्न रहने का सुमधुर विश्वास जगाता है और विद्वत वर्ग को विद्यावारिधि का अक्षय आशीष प्रदान करके उन्हें राष्ट्रहित में अर्पित और समर्पित होने की प्रेरणा देता है। अमावस्या की काली रात दीपों से जगमगाने लगती है। माता लक्ष्मी का पदार्पण होते ही जन-जन के उदास होंठों पर हंसी के फब्बारे फूट पड़ते हैं। निराशा नयन प्रसन्नता से चहक उठते हैं और बाल मण्डली हर्षोल्लास से प्रफुल्लित हो उठती है। ऐसा लगता है मानो माता लक्ष्मी आंगन में थिरकती हुई आई हों।

परन्तु आज के कुछ मठाधीशों ने लक्ष्मी जी को अपने महलों में कैद कर लिया है। हमें उन धनकुबेरों की तिजोरियों से इन्हें मुक्त कराना है। उन्हें प्राप्त करने का सबको बराबर का अधिकार है। यदि महालक्ष्मी को धनकुबेरों ने बंदी बनाकर अपनी तिजोरियों में कैद कर लिया तो एक बार पुनः संघर्ष होगा। दीन-दरिद्रों की झोपड़ियां न जाने कब से प्रकाश की एक किरण को तरस रही हैं। प्रकाश पुंज को अपनी मुट्ठियों में कैद मत करो, उसे जन साधारण की गन्दी-अंधेरी बस्तियों में बिखर जाने दो। गरीब भोले-भाले बालकों की झोली से खीलें-खिलौने का प्रसाद मत छीनो, अन्यथा लक्ष्मी क्रुद्ध होकर शाप दे देंगी। पुनः विप्लव होगा, गरीबों की आहें महलों की अट्टालिकाओं को ध्वस्त कर देंगी।

मेरी लक्ष्मी जी से यही प्रार्थना है कि भारत की पवित्र भूमि पर धर्म की विजय पताका फहरायें। पाप-घृणा, द्वेष-छल-कपट और भ्रष्टाचार का तमस् भारत के क्षितिज से दूर हो, अमावस्या के गहन अंधकार को चीर कर ज्योति स्वरूपा महालक्ष्मी सभी के अधरों पर मुस्कान बिखेरें। वे केवल धनाधिप कुबेर के महलों में ही न थिरकें। दीन सुदामा के बालक वर्षों से खील-खिलौने को तरस रहे हैं। माता महालक्ष्मी उनकी कुटिया में प्रवेश करें। वे अपने स्वर्ण कलश से रत्न-मोती और अशर्फियां इस प्रकार बिखेरें कि कोई उदर भूख से तड़पता न रह जाये, कोई अधर उनके द्वारा वितरित अमृत के लिए तरसता न रह जाये, कोई नयन निराशा से बुझ न पाये, हर देहरी, हर आंगन दीपों के झिलमिल प्रकाश से जगमगा उठे, राष्ट्र के कण-कण में समृद्धि का विलाक्ष हो, खुशहाली की किरणें बिखरती रहें और हर द्वार पर बंधे प्रत्येक वन्दनवार से यही मंगल संदेश मुखरित हो।

आओ आज के दिन हम सभी महालक्ष्मी का स्वागत करें, वन्दन करें, पूजन करें, नमन करें तथा अपने परिवार, समाज तथा राष्ट्र की सुख-समृद्धि के लिए उसकी आराधना करें।

आओ हम सब दीप जलायें,
अंधकार को दूर भगायें।
दीन-दुखी, असहाय जनों की
कुटिया में खुशहाली लायें।
जुगनू बनकर हम चमकें
ज्ञान-पुंज की ज्योति जलायें। ❐

ऐसे बनाएं जीवन को मंगलमय

■ पं. चन्द्रप्रकाश गोसाईं

1. प्रातः उठकर धरती मां को प्रणाम करें, माता-पिता को प्रणाम करें और प्रभु को याद करें। माता-पिता को कष्ट देंगे तो दुःखी रहेंगे। सुख देंगे तो हमेशा आगे बढ़ते जायेंगे।
2. मां की सेवा करें, प्रसन्न रखें, तीर्थयात्रा, देव पूजन सब कुछ पूरा हो जायेगा। कहीं से आने पर मां चेहरा देखती है कि भूखा है या कुछ खाया है, किन्तु परिवार देखता है कि हमारे लिए क्या लाया है?
3. जीवन में सत्य से बड़ा धर्म कोई नहीं है। हमेशा सत्य बोलना चाहिए। सत्य भाषण से अपार शक्ति मिलेगी।
4. अपनी शक्ति के अनुसार गरीबों की, असहायों की, जरूरतमंदों की मदद करें, तत्क्षण आनन्द की अनुभूति होगी।
5. जीवन में ऐसा कोई कर्म न करें कि दिन का चैन और रात की नींद चली जाय।
6. किसी से प्यार करोगे तो प्यार पाओगे, गाली दोगे तो गाली पाओगे, क्यों न प्यार का माहौल बनाकर रहा जाय। आनन्द ही आनन्द का अनुभव होगा।
7. बेईमानी किसी के साथ न करें। इससे अर्जित धन आपकी खुद की ईमानदारी की सम्पत्ति को भी बर्बाद कर देगा।
8. दूसरों की अच्छाई देखें, कमी अपनी देखें और उसे दूर करने का प्रयास करें। भविष्य निश्चित ही आनन्दमय होगा।
9. चरित्र बहुत बड़ी पूंजी होती है। धन गया फिर आयेगा, किंतु चरित्र गया तो समझो सब कुछ चला गया। जैसे शीशा टूटने पर चूर-चूर हो जाता है, उसी प्रकार चरित्र गिरने पर कुछ नहीं रह जाता है। अतः चरित्रवान बनें।
10. यथाशक्ति सबकी भलाई करने की सोचें और करें। कोई विरोधी है तो उसके विरोध का जवाब उसकी भलाई करके दें, आनन्द मिलेगा।
11. परोपकार सिर्फ धन से नहीं किया जाता। इसके अनेक रूप हैं। प्यासे को पानी, भूखे को रोटी, असमर्थ व्यक्ति को उसके निवास तक पहुंचा करके देखें, अपार आनन्द मिलेगा।
12. परिश्रम करके रोटी खानेवाले को गरीब कहा जाता है। प्रभु की बड़ी कृपा गरीबों के साथ है। सादा भोजन करते हैं, खूब परिश्रम करते हैं। स्वस्थ रहते हैं और चैन की नींद सोते हैं। अमीर लोग साधन-सम्पन्न हैं, किन्तु डायबिटीज, ब्लडप्रेशर, हृदयरोग आदि से अनेक कष्ट भोगते हैं; क्योंकि शारीरिक श्रम कुछ है नहीं, इसीलिए हमेशा दुःखी रहते हैं।
13. संसार में जन्म होने पर कितनी प्रसन्नता परिवार में होती है, नाच-गाना होता है, खुशियां मनायी जाती हैं, किन्तु पूरी उम्र हाय-हाय करके बिताने के बाद जाना पड़ता है। जीवन में इस तरीके से रहना चाहिए कि जाने के बाद लोग यह न कहें कि अच्छा हुआ चला गया, बहुत बुरा आदमी था।
14. मनुष्य आता अकेले है, जाता अकेले है, साथ जाता है, केवल किया गया अच्छा-बुरा कर्म। सब कुछ यहीं छूट जाता है।
15. गलती इंसान से होती है, गलती होना स्वाभविक है; किन्तु किसी प्रकार की गलती करने के बाद गलती मान लेना महानता है। ऐसा प्रयास करें कि फिर गलती न हो। अवश्य जीवन मंगलमय बीतेगा।

16. मानव-शरीर के अंदर विकार ही विकार हैं। प्रभु अनेक रूप से विकार बाहर करते हैं। कान से गन्दा खोट, आंख से कीचड़, मुख से बलगम, त्वचा से पसीना आदि जनेन्द्रियों से मलमूत्र बनकर विकार ही बाहर निकलता है और हम स्वस्थ रहते हैं। किंतु एक हम हैं, जो मन-बुद्धि के विकार बाहर नहीं निकाल पाते।
17. जीवन में समय बड़ा अनमोल है। समय का दुरुपयोग नहीं करें। जिसने समय बरबाद किया, बाद में समय उसको बरबाद कर देता है।
18. आज विज्ञान काफी विकास करता जा रहा है, अच्छी बात है, किन्तु इसका परिणाम यह हो रहा है कि हम अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। यही कारण है कि सब कुछ होते हुए भी प्राय: हर परिवार में अशांति का माहौल बना हुआ है। इस विषय में गम्भीर विचार करना आवश्यक है।
19. धन से अधिक परिवार में बच्चों को अच्छे संस्कार देने की आवश्यकता है। यदि संस्कार अच्छे नहीं हैं, तो बच्चे सारी सम्पत्ति बर्बाद कर देंगे, जिस परिवार में अच्छे संस्कार हैं, उस परिवार में किसी प्रकार का अभाव हो नहीं सकता। परिवार हमेशा सुखी रहेगा।
20. बच्चा जब तक किसी लायक नहीं होता, तब तक वह माता-पिता से ही जुड़ा रहता है। जब किसी लायक हुआ, शादी हुई फिर उसको माता-पिता से बात करने का समय तक नहीं रहता। जरा सोचो, आज की जवानी कभी बुढ़ापे में अवश्य आयेगी। फिर वही मिलेगा, जो कर रहे हो। माता-पिता का सम्मान करोगे, तुम्हारी संतानें भी वैसा ही करेंगी, जैसा तुम कर रहे हो।
21. वृद्धावस्था में अपने को बदलने की आवश्यकता है। वृद्धावस्था में शक्ति, बुद्धि सब कमजोर पड़ जाती है। मुंह बन्द करके रहने में सम्मान बना रहेगा। धन-सम्पत्ति किसी का नहीं है। आपका हर जगह अधिकार जताना भूल है। सब कुछ छोड़ना पड़ेगा; क्यों न पहले से हर जिम्मेदारी से मुक्त हो लें। इसी में आनन्द मिलेगा। प्रभु की याद हमेशा करें, त्याग के बिना सुख सम्भव नहीं है। प्रभु में अधिक समय लगाना चाहिए।
22. जीवन में हर व्यक्ति को सुख-दु:ख भोगना पड़ता है। कष्ट आने पर उसको सहर्ष स्वीकार करें और स्वयं को उसका जिम्मेदार मानें। यदि दिन अच्छा आये तो उसे प्रभु की कृपा मानें। अपनी सम्पत्ति, परिवार, बल का घमण्ड न करें, भूल यह होती है कि सुख को हम अपने पुरुषार्थ का परिणाम मानते हैं और दु:ख को प्रभु का दिया हुआ मानते हैं।
23. आपकी हर प्रकार की प्रतिष्ठा एवं विद्वत्ता रूपी सम्पत्ति की ख्याति आपके चुप रहने से ही लोग जान लेते हैं। मूर्ख लोग ही अपनी हर किस्म की योग्यता का प्रचार करते हैं। फल यह होता है कि वे कभी सम्मान के पात्र नहीं हो पाते और उलटे हंसी के पात्र बनते हैं।
24. व्यक्ति के लिए उसकी जिह्वा ही सुखदायी और दु:खदायी बन जाती है। प्रिय वाणी बोलने पर व्यक्ति को प्यार मिलता है, सम्मान मिलता है। टेढ़ी बातें बोलकर यही जिह्वा झगड़ा मार-पीट करा देती है। यही जिह्वा भोजन में स्वास्थ्य के लिए हानिकारक चीजें पसंद करती है, स्वस्थ रहने के लिए सादा भोजन चाहिए, किन्तु जिह्वा उसे पसंद नहीं करती। जिस व्यक्ति का जिह्वा पर नियंत्रण है, वह हमेशा स्वस्थ और सम्मानित रहेगा। रसना, वाणी और उपस्थ का संयम महान् साधना है। इनका संयम करके देखें, जीवन आनन्दमय रहेगा। ❐

शाकाहारी कैसे बचें मांसाहार से?

■ श्री रामनिवास जी लखोटिया

शाकाहारियों के लिए यह जानकर प्रसन्न होने की बात है कि समूचे विश्व में शाकाहार का प्रचलन बड़े जोरों से बढ़ रहा है। जैसे अमेरिका में ही प्रति वर्ष लगभग 10 लाख व्यक्ति मांसाहार का त्याग कर पूर्णत: शाकाहारी बन रहे हैं। पेटा संस्था के अनुसार अमेरिका में लगभग 1 करोड़ 70 लाख व्यक्ति शाकाहारी हो गये हैं। इसी प्रकार इंग्लैंड में प्रति सप्ताह दो हजार व्यक्ति शाकाहारी बन रहे हैं। विश्व के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. कोलेन कैम्पबेल ने कहा है कि शाकाहार से अधिकांश प्रकार के कैंसर, हृदय रोग और बुढ़ापे की कई बीमारियां रोकी जा सकती हैं। इसी प्रकार कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के डॉ. डीन आरनिश का मानना है कि हृदय की धमनियों में यदि खून का आना रुक जाता है तो शाकाहार से बिना आपरेशन किये हृदय का यह कार्य संचालित किया जा सकता है और रोगी स्वत: ही स्वास्थ्य लाभ कर सकता है। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि भारत में फैशन के चलते या अज्ञानतापूर्वक कुछ नये पढ़े-लिखे व्यक्ति मांसाहार की ओर बढ़ रहे हैं। वे भोजन करते समय इस बात का विचार भी नहीं करते हैं कि जो भोजन वे कर रहे हैं वह मांसाहार है या शाकाहार। यहां उन कुछ बातों की ओर ध्यान आकृष्ट किया जा रहा है कि यदि शाकाहारी इन्हें ध्यान में रखें तो वे अनायास या अनावश्यक मांसाहार से बच सकते हैं।

मांसाहारी नामकरण से सावधान : बहुधा बड़े शहरों में जहां वैवाहिक या अन्य अवसरों पर रात्रि-भोज आदि के कार्यक्रम होते हैं, वहां पूर्णत: शाकाहारी परिवारों के कार्यक्रमों में यह देखने में आता है कि कई ऐसे खाद्य पदार्थ जो पूर्णत: शाकाहार हैं परन्तु उनका नाम मांसाहार खाद्य पदार्थों के नाम पर रखा जाता है, जैसे- आलू कबाब, पनीर कबाब आदि। यह एक गलत मानसिकता का द्योतक है। अत: शाकाहारियों को चाहिए कि वे ऐसी गलती करने से बचें।

केक, पेस्ट्री आदि खाने में सावधानी : शाकाहारी परिवारों में भी जन्मदिवस और वैवाहिक दिवस आदि मनाने की प्रथा छोटे या बड़े सभी शहरों में खूब चल पड़ी है। ऐसे समय में बहुधा देखा गया है कि केक काटा जाता है। लेकिन कई पूर्णत: शाकाहारी परिवार इस बात का ध्यान नहीं रखते हैं कि जो केक उन्होंने मंगाया है और जिसको काटकर वे स्वयं भी खायेंगे और अपने मेहमानों को भी खिलायेंगे वह पूर्णत: शाकाहार है या नहीं। इसलिए शाकाहारियों को चाहिए कि केक का आर्डर देते समय केक बनाने वाले को कह दें कि उन्हें अंडारहित केक ही चाहिए। इसी प्रकार अधिकांश पेस्ट्रियों में भी अण्डा होता है। इसलिए जहां तक सम्भव हो शाकाहारी लोग पेस्ट्री का सेवन न करें।

रशियन सलाद एवं सूप से सावधान : होटलों के खाने में अधिकांश व्यक्तियों को यह पता नहीं है कि 'रशियन सलाद' में भी अण्डा मिला होता है, क्योंकि 99 प्रतिशत रशियन सलाद में मैयोनेस नाम का पदार्थ; जो अण्डे के तरल भाग से बनता है, मिलाया जाता है। इसलिए शाकाहारियों को चाहिए कि वे होटल में सलाद आदि का सेवन करते समय रशियन सलाद न लें। इसी प्रकार पंचतारा होटलों में यह ध्यान में रखना चाहिए कि टोमैटो सूप और अन्य किसी प्रकार के सूप न लें; क्योंकि उनमें हड्डी आदि का मिश्रण रहता है। इसलिए शुद्ध सब्जियों का सूप या दाल का सूप होटल आदि के मैनेजर से पूछने के पश्चात् ही शाकाहारियों को लेना चाहिए।

आइस्क्रीम, टॉफी आदि के बारे में सावधानियां: इसी प्रकार शाकाहारियों को चाहिए कि जब वे आइस्क्रीम खरीदें तो यह देख लें कि कहीं वह कसाटा आइस्क्रीम तो नहीं है जिसमें अण्डा मिला हुआ होता

है। शुद्ध वनिला और कुछ साधारण आइस्क्रीमें दूध और क्रीम आदि से मिश्रित होती हैं और उनमें अण्डा नहीं होता है। परंतु शाकाहारियों को चाहिए कि वे विशेष प्रकार की आइस्क्रीमों को खाने से पहले यह पता लगा लें कि उनमें अण्डा या अन्य कोई मांसाहारी पदार्थ मिश्रित तो नहीं है।

दवाइयों आदि पर हरा डाट निशान देख लें: दवाइयों और कई प्रकार के पैक किये हुए खाद्य पदार्थों पर अब सरकारी निर्देश के अनुसार ब्राउन या भूरे रंग का डॉट लगाना जरूरी है– यदि उन वस्तुओं और दवाइयों में किसी भी प्रकार का मांसाहार का कोई अंश मिला हो। यदि दवाइयां या और अन्य पदार्थ पूर्णत: शाकाहारी हैं तो उन पर हरे रंग का बिन्दु लगा मिलेगा। इसलिए दवाइयां और अन्य खाद्य पदार्थ खरीदते समय शाकाहारियों को चाहिए कि वे देख लें कि जिस वस्तु का वे उपयोग करने जा रहे हैं उस पर हरा डॉट अर्थात् बिन्दु है या नहीं।

भ्रामक प्रचार से सावधान : कई बार शाकाहारी व्यक्ति अज्ञानतावश या भ्रमित होकर अपने बच्चों के लिए या स्वयं के लिए अण्डे आदि का सेवन कर लेते हैं। कई बार जब शाकाहारियों के परिवार में कोई सदस्य कमजोर लगता है तो वे अपने मित्र या डॉक्टर आदि के कहने पर अण्डा आदि का सेवन कर लेते हैं; क्योंकि उन्हें यह कहकर अण्डा सेवन करने के लिए प्रेरित किया जाता है कि अण्डे में प्रोटीन अधिक है। जबकि अण्डे में प्रोटीन की मात्रा विभिन्न प्रकार की दालों से बहुत ही कम होता है। एक अण्डे में कुल 13.3 प्रतिशत प्रोटीन है जबकि मूंग या अन्य दालों में लगभग 24 प्रतिशत प्रोटीन होता है, मूंगफली में 31.5 प्रतिशत और सोयाबीन में 43 प्रतिशत तक प्रोटीन होता है। इसके अलावा शाकाहारियों को यह जानकारी रखनी चाहिए कि फल, तरकारी, दालें, गेहूं और चावल आदि में पर्याप्त कार्बोहाइड्रेट (उर्जा का स्रोत रहता है) जबकि अण्डा, मछली एवं बकरे के मांसा आदि पदार्थों में वह शून्य होता है। इस प्रकार की जानकारी होने से शाकाहारी व्यक्ति अनावश्यक मांसाहार से बच सकते हैं और उन्हें बचना भी चाहिए। ❐

ईश्वर में विश्वास

एक बाबा कुएं पर स्वयं को लटका कर ध्यान किया करते थे और कहते थे, जिस दिन यह जंजीर टूटेगी, मुझे ईश्वर के दर्शन हो जाएंगे।

उनसे पूरा गांव प्रभावित था। सभी उनकी भक्ति, उनके तप की प्रसंसा करते थे। एक व्यक्ति के मन में इच्छा हुई कि मैं भी ईश्वर दर्शन करूँ।

वह रस्सी से पैर को बांधकर कुएं में लटक गया और श्री कृष्ण जी का ध्यान करने लगा।

जब रस्सी टूटी, उसे श्री कृष्ण जी ने अपनी गोद में उठा लिया और दर्शन भी दिए।

तब व्यक्ति ने पूछा- आप इतनी जल्दी मुझे दर्शन देने क्यों चले आये, जबकि वे बाबा तो वर्षो से आपको बुला रहे हैं।

कृष्ण बोले, वो कुएं पर लटकते जरूर हैं, किंतु पैर को लोहे की जंजीर से बांधकर। उन्हें मुझसे ज्यादा जंजीर पर विश्वास है। तुझे खुद से ज्यादा मुझ पर विश्वास है, इसलिए मैं आ गया।

आवश्यक नहीं कि दर्शन में वर्षो लगें। आपकी शरणागति आपको ईश्वर के दर्शन अवश्य कराएगी और शीघ्र ही कराएगी।

प्रश्न केवल इतना है आप उन पर कितना विश्वास करते हैं।

ईश्वर सभी प्राणियों के हृदय में स्थित हैं। शरीर रूपी यंत्र पर चढ़े हुए सब प्राणियों को, वे अपनी माया से घुमाते रहते हैं, इसे सदैव याद रखें और बुद्धि में धारण करने के साथ व्यवहार में भी धारण करें। ❐

गाली में प्रशंसा

पटना मेडिकल कॉलेज और अस्पताल से एक सज्जन अपने किसी नजदीकी (रोगी) को देखकर अशोक राजपथ पर आए। एक रिक्शेवाले से पूछा- ''कदम कुआं चलोगे?'' ''चलूंगा हजूर'' बोलकर वह अपने रिक्शे का हैंडिल सम्भाला और चल पड़ा। साहब ने इशारा किया मखनिया कुआं रोड की तरफ परन्तु उससे होकर जाना वर्जित था। 'इ त वन वे है हजूर' - रिक्शावाले ने विनम्र भाव से बोला। कोई बात नहीं मुझे मालूम है, मैं कहता हूं चलो। ''न हजूर बनवरिया देखि ली त...'' यह कहते हुए रिक्शावाला रुक गया और उस रास्ते जाने को बिल्कुल राजी नहीं हुआ। श्री बनवारी सिंह, पुलिस इंस्पेक्टर (ट्रैफिक) उन दिनों पटना में अपनी ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा एवं यातायात के नियमों का सख्ती से अनुपालन कराने के लिए मशहूर थे।

उनके मातहत भी उनसे थर्राते थे। फिर रिक्शावाले का डरना तो स्वाभाविक था। 'बनवारी' की जगह 'बनवरिया' हिन्दी भाषी क्षेत्रों में एक प्रकार की गाली हो जाती है खास कर बड़े लोगों के लिए। लेकिन विवेकशील व्यक्ति के लिए कुछ भी गाली नहीं होती। वह सज्जन मुस्कुराए और रिक्शेवाले की पीठ थपथपाते हुए बोले- ''चलो मैं ही बनवारी सिंह हूं।'' (आप वर्दी में न होकर सामान्य पोषाक में थे) यह सुनते रिक्शेवाले को तो चीरो तो खून नहीं। पर ठंडक से सिकुड़ा हुआ उसका शरीर स्फूर्तिभरा हो गया। दनादन पैडल मारता हुआ रिक्शा गन्तव्य स्थान पर पहुंचा कर झट माफी याचना की- ''माफ करिएगा हजूर! हम पहचाना नहीं, गलती हो गई।'' ''माफी तो मुझे मांगनी चाहिए जो मैं तुम्हें नियम तोड़ने को कह रहा था।'' - यह कहते हुए दो रुपये भाड़ा की जगह पांच रुपये का नोट पकड़ाया और 'पूरा रख लो' कहते हुए साहब गाली में ही अपनी प्रशंसा या प्रसन्नचित घर के अंदर दाखिल हो गए।

■ **छट्ठू ठाकुर**

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

भजन प्रतियोगिता

गत दिनों पूर्वी विभाग के सभी जिलों में भजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह एक वार्षिक कार्यक्रम है। पहले जिले स्तर पर प्रथम, द्वितीय आई टोलियों का विभाग स्तर पर प्रतियोगिता की जाएगी। विभाग स्तर पर जीती हुई टोलियों की प्रान्त स्तर पर प्रतियोगिता कराई जाएगी।

शाहदरा जिला: इनकी प्रतियोगिता 16 नवम्बर को की गई। 5 भजन मण्डलियों ने भाग लिया। दो निर्णायकों ने प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान निकाले। अन्त में सभी को मिष्ठान वितरित किया गया। कुल संख्या –85 रही।

मयूर विहार जिला: आरम्भ दीप प्रज्जवलन और दीप मंत्र से हुआ। सेवा गीत और गणेश वंदना की। श्रीराम के भजन गाए। पांच भजन मण्डलियों ने भाग लिया। प्रथम, द्वितीय और तृतीय निकाले गए। सभी टोलियों को एक जैसे ही उपहार दिये गए। अन्त में जलपान की व्यवस्था रही। यह कार्यक्रम 18 नवम्बर को हुआ। कुल संख्या 80 रही।

गांधी नगर जिला: 21 नवम्बर को डॉ. हेडगेवार भवन में भजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बहनों ने अति सुन्दर राम भजन गाए। 5 मण्डलियों में से प्रथम, द्वितीय, तृतीय चुने गए। यहां पर बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिता भी की गई। विषय 'मेरे सपनों का भारत' रहा। बच्चों ने बहुत सुन्दर चित्र (नव कल्पित) बनाए। एक बिटिया दिव्या ने तो अति उत्तम निबन्ध लिखा।अन्त में बच्चों और बहनों को उपहार वितरित किए गए। जलपान के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ। कुल संख्या– 65 रही। विशेष– गीता कालोनी श्मशाम घाट ठोकर न.16 पर नया सेन्टर शुरू किया गया है। बच्चों की संख्या 26 है।

इन्द्रप्रस्थ जिला: 24 नवंबर को श्रीराम सेवा केन्द्र पर भजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अत्यन्त व्यवस्थित, अनुशासित आयोजन। 5 मण्डलियों ने भाग लिया, 4, 17,18 ब्लॉक हसनपुर, मण्डावली की बहनों ने साज के साथ मनमोहक भजनों की प्रस्तुति दी। निर्णायक मंडल– गुणी महानुभावों ने अपने निर्णय द्वारा कार्यक्रम को विराम दिया। प्रान्त से हरिओम जी विभाग और जिले के कार्यकर्ताओं के सामूहिक प्रयास से आयोजन भव्यता को छुआ। अन्त में सभी बहनों को एक जैसा ही उपहार और जलपान देकर विदा किया। संख्या 85 रही।

– भारती बंसल

फैशन डिजाइनिंग सेन्टर

पूर्वी विभाग के शाहदरा जिले के 'मनोरंजन केन्द्र' पर फैशन डिजाईनिंग प्रकल्प शुरू किया गया। अप्रैल माह में प्रान्त अधिकारी श्रीमती मीनाक्षी मक्कड़ जी के सानिध्य में प्रकल्प उन्नति की ओर अग्रसर है। सीखने वाले विद्यार्थी पूरी लगन और उत्साह से उंचाईयों को छू पाऐंगे। भाविक डिजाइनरों को गढ़ने के लिये मीनाक्षी जी को साधुवाद।

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 6-7 दिसम्बर, 2022, प्रकाशन तिथि-5 दिसम्बर, 2022
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नं. U(C)-166/2022-24
DL(ND)-11/6188/2022-23-24
अग्रिम शुल्क के बिना प्रेषण

कार्यकर्ताओं का प्रवास

गत 24 नवंबर को उत्तरी विभाग स्थित लाल क्वार्टर (विवेकानंद कॉलोनी), रोहिणी में सेवा भारती, दिल्ली के माननीय प्रांत अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल जी एवं माननीय उपाध्यक्ष श्री हेमंत कुमार जी का प्रवास रहा। प्रवास के दौरान कार्यकर्ताओं से विभिन्न सामाजिक उत्थान के विषयों पर मंथन के साथ स्वावलंबन एवं शिक्षण केंद्र की शिक्षिकाओं से भी विचार-विमर्श करने का अवसर प्राप्त हुआ। इसी कड़ी में अधिकारियों एवं अन्य कार्यकर्ताओं के साथ सेवा बस्ती के कार्यकर्ता के घर चाय एवं अल्पाहार भी किया। कार्यकर्ता के निवास पर अनौपचारिक बातचीत में श्री अग्रवाल ने कहा कि संस्कारों का उद्भव एवं संचार की प्रथम व्यवस्था परिवार ही है इसलिए हमें परिवार में सेवाभावी वातावरण के निर्माण के प्रयासों को अनवरत जारी रना चाहिए। सेवा भारती दिल्ली जल्दी ही आर.डब्ल्यू.ए के साथ मिलकर बस्ती के निवासियों को स्वास्थ्य लाभ पहुंचाने के लिए एक डिस्पेंसरी की स्थापना करने की योजना पर काम कर रही है। वर्तमान में महिलाओं के स्वावलंबन के लिए सिलाई केंद्र एवं बच्चों के समग्र विकास के लिए बाल संस्कार केंद्र का संचालन हो रहा है।

चिकित्सा शिविर (दक्षिणी विभाग)

सेवा भारती दिल्ली (दक्षिणी विभाग) द्वारा नि:शुल्क कैंसर जांच शिविर का आयोजन 13 नवम्बर, 2022 को स्वामी विवेकानंद सेवा भारती केन्द्र, लाल कुंआ, नई दिल्ली में किया गया। यह आयोजन फिक्की यंग फलो रिलाइजिंग पोटेंशियल के सौजन्य से और राजीव गांधी कैंसर अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस शिविर से बड़ी संख्या में लोग लाभान्वित हुए। शिविर का शुभारम्भ मुख्य अतिथि डॉ. महेश व्यास जी, डीन-अखिल भारतीय आयुर्वेदिक संस्थान, सरिता विहार, श्रीमती गायत्री राय जी, चेयरपर्सन वाई फलो, डा. दीपिका जी, गायनोक्लोजिस्ट, श्रीमती सुरभि भदोरिया-वाई फलो, श्री हर्ष त्यागी जी, मार्किटिंग हेड (आरजीसीआईआरसी), श्रीमती निधि आहुजा जी, प्रांत उपाध्यक्ष, सेवा भारती-दिल्ली द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया। डॉ. दीपिका ने शिविर में जांच के लिए आई महिलाओं की कैंसर को लेकर कौन्सिलिंग भी की। डॉ. महेश व्यास ने भविष्य में सेवा भारती के साथ निशुल्क आयुर्वेदिक जांच शिविर लगाने लिए सहयोग करने के लिए बोला। वाई फलो की चेयरपर्सन के द्वारा आगे भी इस प्रकार सहयोग करते रहने का आश्वासन दिया गया। आरजीसीआईआरसी के श्री हर्ष त्यागी ने बताया कि जांच की रिपोर्ट पॉजिटिव आने पर आरजीसीआईआरसी के सीएसआर के द्वारा 5 लाख तक का इलाज निशुल्क किया जायेगा। इस निशुल्क कैंसर जांच शिविर में एन एस एस (देशबंधु कॉलेज) के द्वारा भी सहयोग किया गया।

मुद्रक/संपादक/प्रकाशक: इन्दिरा मोहन द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।